ॐ श्री गणेशाय नमः

भविष्य निर्णय

द्विमासिक पत्रिका

(स्वास्थ्य, ज्योतिष, वास्तु, अध्यात्म, तंत्र-मंत्र चिंतन एवं बाल कहानी की द्विमासिक काल दर्शक)

वर्ष : 5 अंक : 4 अप्रैल 2015-मई 2015 मूल्य 15/-

संरक्षक
डा. चन्दन लाल पाराशर
डा. अशोक चतुर्वेदी
श्री महेश दत्त भारद्वाज
श्रीमती बिमला शर्मा

प्रधान सम्पादक
डा. महेश पारासर
फोन- 2525262, 2856666

सह-सम्पादक
डा.(श्रीमती) शोनू मेहरोत्रा
डा.(श्रीमती) रचना भारद्वाज
श्री पुष्पित पारासर
श्रीमती आयुषी पाराशर

वितरण प्रबन्धक
पवन मेहरोत्रा
डा. सतीश शर्मा

परामर्शदाता
डा. खेमचन्द्र शर्मा
डा. सतीश शर्मा
श्री महेश वर्मा
श्री जी. पी. एस. राघव

वित्त सलाहकार
श्री सतीश चन्द्र बंसल

आवरण सज्जा
ए. डी. ऑफसेट
आगरा फोन-9319053439

सदस्यता शुल्क
150/ दो वर्ष

ज्योतिः शास्त्रमनन्ताभ- स्कन्धत्रय समन्विवम् । सर्वलोकहितार्थाय, मुनिभिर्निर्मितं पुरा ।।
नमस्ते वास्तु देवाय, भू-शय्या शायिने प्रभो । कल्याणं कुरु मे नित्यं- सर्वथा सर्वदा विभो ।।
आचार्य चन्दन लाल पाराशर

क्या कहाँ

क्यों किया जाता है अक्षय तृतीया पर दान	डा. महेश पारासर	2
मंत्र शरीर धारी होते हैं जो मन की इच्छा पूरी करते हैं	डा. रचना के भारद्वाज	4
शत्रु बाधा निवारण हेतु बगलामुखी साधना	डा. शोनू मेहरोत्रा	5
हस्तरेखा विज्ञान	डा. अरविन्द मिश्र	6
अक्षय तृतीया	पवन कुमार मेहरोत्रा	7
ब्रह्ममुहूर्त में जागने से फायदे	पुष्पित पारासर	8
स्वागतम नवसंवत्सर- 2072	कविता अग्रवाल	9
खिड़कियों के वास्तु दोष करते दाने-दाने को मोहताज	अजय दत्ता	10
ज्योतिष में रत्नों का महत्व	प्रवीणा पाठक	10
Gaj Kesari	वरून गुप्ता	11
बुजुर्गो में पनपता अकेलापन	सुरेश अग्रवाल	11
मानसिक संघर्ष के समाधान हेतू तीन साधन	मोहिनी पाराशर	12
पृथ्वी मुद्रा	विष्णु पाराशर	12
मासिक राशिफल	पुष्पित पारासर	13-14
उतावलापन	विजय शर्मा	15
पूजा - सामिग्री		20

इस पत्रिका का कोई भी अंश या भाग किसी भी रूप में प्रकाशक की अनुमति के बिना, किसी अन्य के द्वारा उपयोग किया जाना वर्जित है। लेखकों के विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। अतः लेखों के सम्बन्ध में उत्पन्न किसी भी प्रकार के विवाद हेतु पत्रिका परिवार उत्तरदायी नहीं होगा। इसके लिए मूल लेखक ही जिम्मेदार होगें। सम्पादक किसी भी लेख को बिना कारण सम्पादित/निरस्त किये जाने का अधिकार सुरक्षित रखते हैं। अप्रकाशित पांडुलिपियों की वापसी नहीं होगी। कॉपीराईट अधिकार भविष्य निर्णय में निहित रहेगा। हमारा न्यायालय क्षेत्राधिकार आगरा होगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक डा. महेश पारासर द्वारा Aydee Offset 42/140 एम, कृष्णा कुंज, हलवाई की बगीची, आगरा- से छपवाकर FF-6, भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह टाकीज के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा से प्रकाशित। RNI No. UPHIN/2010/44791

''प्रधान संपादक की कलम से''

डा. महेश पारासर
ज्योतिष महामहोपाध्याय, वास्तुशास्त्राचार्य,
ज्योतिष भूषण, ज्योतिष अलंकार,
ज्योतिष भास्कर, वराहमिहिर पद से सम्मानित
प्रबन्धक, ज्योतिष तंत्र शिक्षा प्रसार समिति

क्यों किया जाता है 'अक्षय तृतीया' पर दान

दि. 21 अप्रैल 2015 को अक्षय तृतीया है। पौराणिक कथा और ग्रंथो की माने तो इस दिन आप जो भी शुभ कार्य करते है उनका अक्षय फल मिलता है। आज के दिन नया चांद आने के तीसरे दिन यह दिन आता है। इसलिए इसे तृतीया कहते है। इसी कारण इस खास दिन को अक्षय तृतीया कहा जाता है। वैसे तो अक्षय तृतीया निःस्वार्थ भाव से जरूरतमंदों को दान करने का महापर्व है। हिंदू कलेंडर में अक्षय तृतीया को एक शुभ दिन के तौर पर गिना जाताहै। इस दिन सूर्य चंद्रमा और वृहस्पति एकजुट होकर चलते है, जो हर तरह के काम के लिए शुभ मुहूर्त माना जाताहै। यही वजह है कि लोग इस दिन को किसी नए सामान की खरीदारी और इन्वेस्टमेंट के लिए अच्छा मानते है। खरीदने के साथ ही कोई चीज करना भी इस दिन पुण्य बटोरने व समृद्धि लाने का प्रतीक माना जाता है। इसे आखा तीज भी कहते है। इस दिन घर में हवन पूजा और पितरों को श्रद्धा देना भी काफी महत्वपूर्ण माना जाता है।

पुराणों के अनुसार अक्षय तृतीया पर दान धर्म करने वाले व्यक्ति को वैकुण्ठ धाम में जगह मिलती है। इसीलिए इस दिन को दान का महापर्व भी माना जाता है। इस दिन नए कार्य शुरू करने के लिए इस तिथि को शुभ माना गया है। भगवान विष्णु को सत्तू का भोग लगाया जाता है और प्रसाद में इसे ही बांटा जाता है। अक्षय तृतीया के दिन गंगा स्नान का विशेष महत्व है। इस दिन स्नान करके जौ का हवन, जौ का दान, सत्तू को खाने से मनुष्य के सब पापों का नाश होता है। इस दिन भगवान श्री कृष्ण की मूर्ति पर चंदन या इत्र का लेपन भी किया जाता है। महिलांए इस दिन शिव मंदिर जाकर गले में लाल धागा और माथे पर सिंदूर लगाकर पति की लंबी उम्र के लिए दुआ मागती है। माना जाता है कि कोई व्यक्ति लंबे वक्त से बीमार चल रहा है, तो उसके तकिए के नीचे नीम की पत्तियां रखकर उन्हे इस दिन शिव मंदिर में चढ़ाने से लाभ मिलता है।

शादी व दूसरे किसी फंक्शन के लिए भी यह दिन शुभ होता है। इस दिन मुहूर्त व लग्न निकालने की जरूरत नही होती है। सीधे कोई भी काम किसी भी वक्त पर किया जा सकता है। जिन लोगो की शादी का लग्न नहीं निकल पाता है, वे इस दिन बिना किसी लग्न के शादी कर सकते है। माना जाता है कि इस दिन त्रेता युग की शुरूआत हुई थी। इस युग की आयु 12,96,000 साल रही। इसी युग में भगवान श्री बामन भगवान, श्री परशुराम एंव भगवान श्री राम ने अवतार लिया। इस विलक्षण योग में बदीनाथ के पट खुलते है। इस दिन पूर्ण बलि स्वार्थ सिद्ध योग रहता है। इस दिन सोने चांदी की खरीद और दान पुण्य सबसे अधिक शुभ फल देने वाला होता है। पाण्डुलिपियों और शास्त्रों में उल्लेख है कि पर्व के दिन भगवान श्री कृष्ण चरण दर्शन करने से बद्रीनाथ धाम के दर्शनों का पूरा फल श्रद्धालु को मिलता है।

कहा जाता है, कि इस खास दिन पर आप जितना दान पुण्य करते है, आपको उससे कई गुना ज्यादा आपको रिटर्न मिलता है। कहा जाता है, कि अपने धन को बढाने का यह एक शुभ दिन है और इसी बात में यकीन करते हुए सोना खरीदने का प्रचलन शुरू हो गया वरना शास्त्रों में इस दिन सोना खरीदने का कोई उल्लेख नहीं मिलता है। एक पुरातन कथा तो यह भी है कि आज के दिन भगवान शिव से कुबेर को धन मिला था और इसी खास दिन भगवान शिव ने माता लक्ष्मी को धन की देवी का आर्शीवाद भी दिया था।

अक्षय तृतीया पर दान क्या करें

कहा जाता है इस खास दिन पर गरीब और भूखे को खाना जरूर खिलाना चाहिए और उन्हे उनकी जरूरत के हिसाब से दान भी करना चाहिए। दान करने से जाने अनजाने हुए पापो का बोझ हल्का होता है। पुण्य की पूंजी बढती है। अक्षय तृतीया के विषय में कहा जाता है कि इस दिन किया गया दान खर्च नही होता है, यानी आप जितना दान करते है उससे कई गुना आपके आलौकिक कोष में जमा हो जाता है। मृत्यु के बाद जब अन्य लोक में जाना पडता है तब उस कोष से दिया गया दान विभिन्न रूपो में प्राप्त होता है। पुनर्जन्म लेकर जब धरती पर आते है तब भी उस कोष में जमा धन के कारण भौतिक सुख एंव वैभव प्राप्त होता है।

भविष्य पुराण में कहा गया है–**'यत् किंचिद् दीयते दानं स्वल्प वा यदि वा वहु। तत् सर्वअक्षय यस्मात् तेनेयमक्षया स्मृता।।'**
अर्थात इस तिथि में थोडा या बहुत, जितना और जो कुछ भी दान किया जाता है, उसका फल अक्षय हो जाता है।

ऋषि–मुनियों का निर्देश है कि अक्षय तृतीया के दिन हर व्यक्ति को अपनी सामर्थ्य के अनुसार दान अवश्य करना चाहिए।

1. इस दिन दान करना आपको मृत्यु के भय से काफी दूर रखता है। **2.** कहते है इस दिन गरीब बच्चो को दूध, दही, मक्खन, छेना, पनीर आदि का दान करते है तो मां सरस्वती का आर्शीवाद प्राप्त होता है। **3.** अक्षय तृतीया के दिन विशेषकर जौ, तिल, और चावल का दाना महत्वपूर्ण माना जाता है। 4. गंगा स्नान के बाद सतू खाने तथा जौ और सतू दान करने से आप अपने बुरे कर्मो के पाप से मुक्त हो सकते है। **5.** प्रातः पंखा, चावल, नमक, घी, शक्कर, साग, इमली, फल तथा वस्त्र का दान करके ब्राह्मणों को दक्षिणा भी देनी चाहिए। **6.** अक्षय तृतीया के दिन खरबूजा और मटकी का दान करने का भी महत्व है।

अक्षय तृतीया का महत्व

इस दिन सतू अवश्य खाना चाहिए। इस दिन से सतयुग एंव त्रेतायुग का आरम्भ माना जाता है। इस दिन बद्रीनारायण के पट खुलते है। नर–नारायण ने भी इस दिन अवतार लिया था। श्री परशुरामजी का अवतरण भी इसी दिन हुआ था। हयग्रीव का अवतार इसी दिन हुआ था। वृंदावन के श्री बाकेबिहारी जी के मंदिर में केवल इसी दिन श्रीविग्रह के चरण–दर्शन होते है अन्यथा पूरे वस्त्रो से ढके रहते है। जो मुनष्य इस दिन गंगा स्नान करता है, उसे पापों से मुक्ति मिलती है। शुभ व पूजनीय कार्य इस दिन होते है, जिससे प्राणियों (मनुष्यों) का जीवन धन्य हो जाता है। श्री कृष्ण ने भी कहा है कि यह तिथि परम् पुण्यमय है। इस दिन दोपहर से पूर्व स्नान, जप, तप, होम, स्वाध्याय, पितृतर्पण तथा दान आदि करने वाला महाभाग अक्षय पुण्यफल का भागी होता है। बद्रीनाथ को अक्षय चावल चढाने से मनुष्य की सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती है।

अक्षय तृतीया पर यह ना करें

भविष्य पुराण में बताया गया है कि अ.क्षय तृतीया के दिन व्यक्ति जो भी काम करता है। उसका परिणाम इस जन्म में ही नही बल्कि कई कई जन्मो तक प्राप्त होता है। इसलिए अक्षय तृतीया के दिन कुछ भी करने से पहले यह सोच लें कि आप जो कर रहे है उसका परिणाम क्या होगा । अक्षय तृतीया के दिन लालच के कारण किसी को आर्थिक नुकसान पंहुचाते है क्रोध या हिंसा करते है किसी का तिरस्कार करते है या काम वासना से पीडित होकर कोई गलत काम करते है तो इसका कष्टकारी परिणाम भी आपको कई जन्मों तक भुगतना पडता है।

महेश पारासर

पाठकों के पत्र

परम् श्रद्धेय गुरू जी,

मैं आपकी पत्रिका भविष्य निर्णय का नियमित पाठक हूँ। पत्रिका का प्रत्येक अंक अनमोल है। सभी लेख उत्तम व ज्ञान वर्धक होते है। आशा है कि आने वाले दिनो में पत्रिका और अधिक सफलता के स्पर्श करेगी।

राघव शर्मा, दिल्ली

आदरणीय पारासर जी,

विगत दिनों आपसे व्यक्तिगत भेंट करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आपके व्यवहार ने बहुत प्रभावित किया। आपके बताये उपाय कर रहा हूँ। मुझे बहुत लाभ है।

मनोज तिवारी, मथुरा

आपके प्रश्नों के समाधान

प्रश्न 1. मेरे पति का स्वास्थ्य ठीक नहीं चल रहा है। उनकी कुण्डली भेज रही हूँ। उचित मार्गदर्शन करें।

राखी वर्मा, आगरा

उत्तर– उनकी शनि की साढेसाती प्रारम्भ हो गई है। उनसे शनि स्त्रोक्त का पाठ करवायें तथा शनि मंत्र का जाप करवायें। पन्ना रत्न धारण करवायें। जुलाई 2015 के बाद स्वास्थ्य ठीक हो जायेगा।

प्रश्न 2. मेरे बेटे का पढने में मन नहीं लगता। उपाय बताये। कुण्डली संलग्न है।

आर. एस. त्रिपाठी, आगरा

उत्तर– राहु की महादशा चल रही है। बेटे को सरस्वती यंत्र का लाकेट धारण करवायें। पक्षियों को दाना चुगायें। लाभ मिलेगा।

डा.महेश पारासर

आपकी वास्तु समस्या का समाधान

समस्या– 1. कृपया बताने की कृपा करें कि हम अपने घर में समरसेबिल कहाँ लगवायें?

कृपा शंकर पाण्डेय, अलीगढ़

समाधान– वास्तु के हिसाब से समरसेबिल ईशान कोण या उत्तर मध्य में स्थापित करना सर्वश्रेष्ठ रहता है।

समस्या– 2. हमारें घर का वास्तु बताने की कृपा करें। नक्शा संग्लन है। **अमित अग्रवाल, हाथरस**

समाधान– आपके घर में उत्तर दिशा में सीढियाँ है। सीढियों के नीचे शौचालय है। यह वास्तुदोष है। उत्तर दिशा में सीढियों के होने से परिवार का विकास रूकता है। सीढियों को दक्षिण की तरफ ले जाये तथा शौचालय को वायव्य कोण में बनाने से लाभ मिलेगा।

पं. अजय दत्ता
मो. 9319221203

मंत्र शरीर धारी होते है जो मन की इच्छा पूरी करते है

डा. रचना के भारद्वाज (पी.एचडी)
वास्तु शास्त्राचार्य, ज्योतिष प्रभाकर, अंक विशारद
नई दिल्ली

मंत्र का संबंध व्यक्ति के मन से है। जो इच्छाएं मानव के लिये पूर्णतः असम्भव होती है उन इच्छाओ की पूर्ति हम मंत्रो के द्वारा करते है। घर की मर्यादा की चिन्ता, जमीन–जायदाद संबंधी क्लेषों से मुक्ति, पापों के नाश की चिन्ता, शत्रुओं की चालों से सुरक्षा, दुर्बल देह की पुष्ट हो जाने की लालसा, राजपक्ष में सफलता, रोग एंव शत्रुओं से रक्षा का मार्ग, कैंसर जैसे घातक रोग, हद्रय रोग, जलोदर, उदरशूल, प्रसव शूल तथा क्षय रोग से निवृति एंव मानसिक शांति पाने का मार्ग हम मंत्रो के द्वारा प्राप्त कर सकते है।

मंत्र शरीरधारी होते हैं।

यहाँ मैं आपको बता देती हूँ कि मंत्र शरीरधारी हो सकते है। अतः मंत्रो को जितना अधिक से अधिक संख्या में जपा जाता है, उसमें छिपी आणविक ऊर्जा शरीर का रूप धारण करने लगती है। जो शरीर धारण कर लेने के पश्चात् साधक की इच्छा पूरी करती है।

इसी प्रकार रोग भी शरीरधारी होते है। जब कोई साधक संबंधित रोग से मुक्ति पा लेने का मंत्र जपता है, तब शरीरधारी मंत्र उस रोग को उसके शरीर सहित खा जाता है और साधक रोगमुक्त होकर आरोग्य प्राप्त कर लेता है।

कुल की मर्यादा की रक्षा के लिये मंत्र : घर के किसी सदस्य के आचरण के कारण कुल मर्यादा को खतरा पैदा हो गया हो अथवा वह नष्ट हो चुकी हो, तब ऐसी परिस्थिति में उसे खाने से बचाने के लिए अथवा उसकी वापसी के लिए वागीश्वरी देवी का ध्यान करते हुए निम्न मंत्र को 108 बार नित्य जपना चाहिये।

ऊँ क्लीं हीं श्रीं हुम् उषहस्ते कुल वागीश्वरी,
ऐं ठः, ऊँ ठः, रवीं ठः स्वाहा।

जमीन जायदाद संबंधी क्लेशों से रक्षा के लिये मंत्र : जमीन जायदाद संबंधी क्लेशों से मुक्ति पाने के लिये निम्न मंत्र को सवा लाख बार जपना चाहियें। मंत्र को प्रतिदिन एक हजार बार जपकर पूरा करना चाहिये।

ऊँ हीं श्रीं क्लीं भुवनेशवर्ये स्वाहा

रोग एंव शत्रु पर विजय के लिये मंत्र : निम्न मंत्र की पांच मालाएं नित्य जपने से रोग एंव शत्रु पर विजय प्राप्त होती है। मंत्र जपते समय माँ श्यामा का ध्यान करना चाहिये।

ऊँ श्रीं हीं क्रां क्रीं क्रैं क्रौं क्रः सुधारसे श्यामै,
कृष्णशांप विमोचन, अमृत स्वावय स्वाहा।

दुर्बल शरीर को बलवान बनाने के लिये मंत्र : यदि किसी व्यक्ति का शरीर दुर्बल है, जिस कारण उसे हर कोई दबा लेता है। तब ऐसे व्यक्ति को शरीर की पुष्टि के लिये माँ वज्र योगिनी का ध्यान करते हुए निम्न मंत्र का एक सौ आठ बार नित्य जाप करना चाहिये।

ऊँ हीं वज्रयोगिन्यै स्वाहा।

अथवा

ऊँ वं वज्र योगिन्यै स्वाहा।

कैंसर रोग से निवृति के लिये मंत्र : कैंसर जैसे घातक रोग के समूल नाश के लिए माँ दुर्गा के चित्र अथवा प्रतिमा के सन्मुख धूप–दीप जला कर निम्न मंत्र को किसी भी मंगलवार अथवा पर्व से नित्य 1008 बार जपने से कैंसर रोग का समूल नाश हो जाता है।

ऊँ घिं चित्रघंटाम्यां नमः।

मानसिक शांति के लिये मंत्र :– मानसिक शांति प्राप्त करने के लिए अथवा पति पत्नि के वैचारिक मतभेदों को दूर करने के लिये निम्न मंत्र भी उपरोक्त संख्या तथा विधान के अनुसार जपना चाहिये।

ऊँ शों शोक विनाशिनीम्यां नमः।

❋❋❋

रचनाएँ आमंत्रित है

प्रिय पाठकों,

भविष्य निर्णय पत्रिका आपकी अपनी पत्रिका है। इस पत्रिका की विषय सामग्री को और रूचिकर बनाने हेतु रचनाएँ आमंत्रित की जाती है जिसमें ज्योतिषीय उपायों से प्राप्त परिणाम, आर्युवैदिक चिकित्सा के नुस्खे, व्यायाम प्राणायाम कैसे करें, मुद्राओं से लाभ, व्यवहारिक विज्ञान, भारतीय संस्कारो की स्वीकार्यता, सामाजिक –पारिवारिक हित के लेख, सच्चे संस्मरण आदि हो सकते है।

आप अपनी मौलिक रचनाएँ नीचे दिए गए पते पर, ई. मेल पर या व्हाटस ऐप पर अपनी फोटो सहित भेज सकते है।

हमारा पता है– भविष्य दर्शन, शाह सिनेमा के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा। पिन : 282002 मों. 9719666777

ई.मेल– pushpit_aayu1910@yahoo.co.in

Consult any problems: Health, Wealth, Marriage, Business, Education, Family Relations, Jobs,Enemies & Property

Remedies by Stones, Yantra, Mantra & Pooja

Horoscope, Match Making & Varshphal

Mon to Thu12 PM to 6 PM

भविष्य दर्शन®

Dr. Rachna K Bhardwaj

Consultant of Astrology & Vastu

CONSULTATION ON PRIOR APPOINTMENT ONLY : PH: 09717195756

H.O.- Dr. Mahesh Parasar, Opp. Shah Cinema, Agra Ph. 0-0562-2525262,2856666

❋❋❋

शत्रु बाधा निवारण हेतु बगलामुखी साधना

डा. शोनू मेहरोत्रा
वास्तुमहर्षि, ज्योतिषप्रभाकर,
वास्तु प्रवक्ता; अखिल भारतीय–ज्योतिष संस्थान

शत्रु संहार के लिए तथा शत्रुबाधा के निवारण के लिए अगर कोई साधना है तो वह है भगवती बगलामुखी साधना। राजसत्ता पर बैठा व्यक्ति चाहे वह कोई भी हो, अनिवार्य रूप से इस साधना की प्राप्ति के लिये आतुर होता है। इतिहास साक्षी है कि भारत के बहुत से राष्ट्रपति एंव प्रधानमंत्री **दतिया में बगलामुखी के सिद्ध पीताम्बरा पीठ** पर अपना माधा टेकने आते है।

बगलामुखी को स्तंभन की देवी माना जाता है। वह शत्रु को स्तंभन कर देने में अद्वितीय है। शत्रुबाधा हो या कोर्ट कचहरी का चक्कर, बगुलामुखी साधना से अनुकूलता की प्राप्ति होती है। भगवती बगलामुखी के मंत्र के बारे में यह कहा जाता है कि यह अकेला मंत्र प्रचंड तूफान को भी रोकने में पूर्णतः सक्ष्म है। ऐसे अद्वितीय मंत्र की साधना करना जीवन का सौभाग्य है। अपनी जीवन रक्षा तथा विपरीत परिस्थितियों से बचाब के लिये, यह अद्वितीय है। शत्रु विनाश, मुकदमे में इच्छानुसार विजय प्राप्त करने में तो यह रामबाण है। बाहरी शत्रुओं की अपेक्षा आंतरिक शत्रु अधिक प्रबल व घातक होते है। अतः बगलामुखी साधना की मानव कल्याण, सुख हेतु विशेष उपयोगिता दृष्टिगोचर होती हैं।

बगलामुखी साधना एंव उपासना विधि : सर्वप्रथम साधक को बगलामुखी साधना प्रारम्भ करने हेतु शुभ मुर्हूत का चयन करना होता है जैसे गुरू पुष्य योग, दीपावली या होली की रात्रि या अन्य शुभ मुर्हूत किसी योग्य विद्वान से जानकर पूजा प्रारम्भ करें। उत्तम मुर्हूत के पश्चात् किसी शांत एंव पवित्र साधना स्थल का चयन करें उस स्थान को शुद्ध गंगाजल से धोकर पवित्र कर लें। मिटटी या गाय के गोबर से लीप लें। तत्पश्चात् एक लकडी की चौकी पर पीला रेशमी वस्त्र बिछाकर हल्दी मिले चावल से अष्ट दल बनाकर उस पर सिद्ध पूजा किया हुआ बगलामुखी यंत्र स्थापित करे। इस यंत्र की स्थापना के पश्चात् उसका पूजन धूप, दीप, पीत पुष्पों, पीले नैवेध्, पीले फलों, पीले चन्दन, हल्दी इत्यादि से करें व निम्न बातों का ध्यान रखें।

साधना से पूर्व ध्यान रखने योग्य बातें

1. पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करें।

2. साधना में पहले गुरू का ध्यान करें व उनसे मन ही मन आज्ञा लें।

3. साधना बच्चों व डरपोक व्यक्तियों को नहीं करनी चाहिये।

4. साधना के समय मुख उत्तर या पूर्व दिशा की ओर होना चाहिए।

5. बैठने के लिये आसन पीले रंग का होना चाहिये।

6. पीले वस्त्र धारण करके ही यह साधना प्रारम्भ करनी चाहिए।

7. मंत्र जाप पीली हल्दी की माला से ही करना चाहिये।

8. पूजन हेतु पीले पुष्प, पीला नैवेद्य, गोघृत का प्रयोग करना चाहिए।

9. इस साधना को रात्रि 9 से 12 के मध्य प्रारम्भ करें।

10. इस साधना के दौरान व्यक्ति दूध केसर युक्त, बेसन के पदार्थ, केला, पीली मिठाई इत्यादि का सेवन करें।

11. मंत्रो के जाप 1 लाख 7,9,11 या 21 दिन के अन्दर पूरें करें। ध्यान रहें प्रथम दिन जितने जाप करें उतनी संस्था में ही जप प्रतिदिन करें कम या अधिक नहीं।

12. जाप संस्था का दशांश हवन, हवन का दशाशं तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन व मार्जन का दशांश ब्राह्मण भोजन करना चाहिये। इस प्रकार साधना करने से सिद्धि प्राप्त होती है।

विशेष:– साधारण गृहस्थ व्यक्ति सिर्फ सिद्ध बगलामुखी यन्त्र की स्थापना पीले वस्त्र पर हल्दी मिले चावल से अष्टकमल बनाकर करें व रोजाना पीले वस्त्र धारण कर पीले आसन पर बैठकर हल्दी की माला से जाप करें व गोघृत का दीपक जलायें। व पीले पुष्प व पीले नैवेद्य का भोग लगाकर रोजाना 1 माला 108 बार जाप करें। उपरोक्त विधि का पालन करने से भी धीरे धीरे शत्रुओं का स्तम्भन होता है। मुकदमे आदि में विजय प्राप्ति होती है व शत्रु परास्त होते चले जाते है।

शेष पेज 19 पर.....

Free services offered by us on our website www.bhavishydarshan.in

1. Horoscope Making
2. Match-Making
3. Lal Kitab Predictions
4. Successful Name
5. Baby Names
6. Favourable Gems
7. Panchang
8. Calender
9. Bi-monthly Magzine
10. Daily/Yearly Rashiphal
11. Vastu Remedies
12. Details of Yantra/Mantra

Connect With Us

and get 15% discount*

*valid for a single user

हस्तरेखा विज्ञान

डॉ. अरविन्द मिश्र
ज्योतिष भूषण, वास्तुशास्त्राचार्य

हस्तरेखा विज्ञान भी व्यक्ति के वर्तमान एंव भविष्य के बारे में पूर्ण जानकारी देने में सक्षम है। इसके लिए कुछ बातों को जानना बहुत जरूरी है। जैसे पशु विद्या के जानकार लोग घोड़ा, गाय, भैंस, बैल, ऊंट आदि के अंगो की बनावट पर बारीकी से नजर डालते है और यह बता देते है कि यह पशु इस नस्ल का है। इसके गुण, कर्म, और स्वभाव इस प्रकार के होगें। उस पशु को काम में लाकर परीक्षा करने के लिए बहुत समय चाहिए। इतना समय खरीद फरोख्त में नही मिलता। यह कठिनाई बहुत बड़ी मालुम पड़ती अगर शारीरिक चिन्हो को देखकर स्वभाव जानने की विद्या का आविष्कार न हुआ होता। परन्तु अब वैसी कठिनाई नहीं है एक मामूली किसान मौटे तौर से देख भाल करके झट बता देता है कि यह बैल कैसा निकलेगा। गाय भैस के दूध घी के बारे में भी वह आसानी से अंदाजा लगा लेता है। इसी प्रकार ऊंट, घोडा, हाथी आदि की खरीद करने वाले लोग भी एक दृष्टि डालकर पशु के भीतरका हाल जान लेते है। उनका अंदाज कुछ अपवादों को छोडकर आम तौर से ठीक ही निकलता है।

आकृति देखकर पशुओं का स्वभाव जानने की विद्या इतनी सच साबित हुई कि अब उसमें संदेह और मतभेद की अधिक गुंजाइश नहीं रही। अनुभव ने उसकी प्रामाणिकता साबित कर दी है। यह सब देखते हुए भी जो लोग आकृति देखकर मनुष्य की पहचान के बारे में शक करते है उसे मिथ्या कहते है। उनकी बुद्धि को क्या कहा जाए। वास्तविकता यह है कि जिस प्रकार पशु के बाह्म चिन्हो को देखकर उसके भीतर के गुण जाने जा सकते है उसी प्रकार मनुष्य को भी पहचाना जा सकता है। गुणों से आकृति की रचना होती है। जिसका जैसा स्वभाव है उसकी शारीरिक आकृति भी वैसी ही बनने लगेगी। हम देखते है कि जब कोई आदमी झल्लाया हुआ हो झुंझला रहा हो तो उसके चेहरे की सिकुडन झुर्रियां एक खास किस्म से तनी होती है। मस्तक पर झुर्रियाँ पड़ जाती है। भौहो में ऐंठ पड़ जाती है। कनपटी के पास चमड़ा सिकुड जाता है। आँखे चिपटी सी रहती है। गालों की मांसपेशियों तन जाती है। इसी प्रकार शोक, चिंता, दुख, पश्चाताप, विरह वेदना, दर्द, हानि, खुशी, लाभ, संतोष, अभिमान आदि की अवस्था में भी अलग अलग प्रकार की आकृतियाँ, भाव मांगिमा बनती है। जैसे– जैसे अंतरंग अवस्था बदलती रहती है वैसे वैसे चेहरे की भाव मंगिमा भी बदल जाती है। जब मन मे कोई भाव स्थायी रूप से आता है तो आकृति भी उसी के अनुसार बदल जाती है। किंतु यदि कोई मनोभाव स्थायी रूप से अपने ऊपर अधिकार जमा ले तो उसकी छाया प्रत्यंगो पर स्थायी रूप से प्रकट होने लगती है। क्रोधी आदमी की आंखों में लाल रंग के डोरे पडने लगते है। स्वार्थी आदमी की आंखों में तिरछापन आ जाता है। माथे पर अधिक सलबटें देखकर यह अनुमान लगाया जाता है कि एक इस आदमी को भावनाओं का आवेश अधिक आता है।

शरीर शास्त्र के अनुभवी विद्वानों का कथन है कि मस्तिष्क से निकलकर ज्ञान तंतु शरीर के विभिन्न अंगो मे फैल गये है। यों तो ये ज्ञान तंतु शरीर के हर एक हिस्से में मौजूद है परन्तु सबसे अधिक मात्रा में ये तंतु हाथों की ओर गए है। मस्तिष्क में जो विचार धारा काम कर रही है, चिंत में जैसे विश्वास जम गए है हद्रय में जैसी धारणा है, उसका प्रकटीकरण हाथ को देखकर आसानी से हो सकता है। आकृति विज्ञान के विशेषज्ञ और शरीर विज्ञान के आचार्य एक स्वर से इस बात का समर्थन करते है कि शरीर की भीतरी दशा का हाथों को देखकर परिचय प्राप्त किया जा सकता है। वैद्य लोग हाथ की जड़ में चलने वाली नाड़ी को देखकर रोगो का निदान करते है। कारण यह है कि ज्ञान तंतुओं का हाथ में अत्यधिक बाहुल्य होता है। चिकित्सक लोग नाखून की परीक्षा करने से भी रोगो का निर्णय करते है। इसका कारण भी हाथों में अधिक मात्रा में रहने वाले ज्ञान तंतु ही है।

जिन्होने डाक्टरी विद्या पढ़ी है वे जानते है कि लकवा रोग से कुछ समय पूर्व हथेली की रेखाओं में बड़ा भारी परिवर्तन होने लगता है। अक्सर बहुत सी छोटी मोटी रेखायें बिल्कुल गायब हो जाती है। इससे प्रतीत होता है कि हाथ के द्वारा न केवल वर्तमान काल की स्थिति जानी जाती है वरन यह भी जाना जा सकता है कि भविष्य में कैसी कैसी घटनाएं घटित होने वाली है। वर्तमान से भविष्य का बहुत बड़ा संबंध है। अमुक व्यक्ति आज यह कर रहा है यह जान लेने के पश्चात् यह अनुमान लगाना सहज है कि उसका भविष्य कैसा होगा। मोटी बुद्धि वालों को भविष्य की जानकारी प्राप्त करना कोई चमत्कार जैसी वस्तु दिखाई पडती है परन्तु वास्तव में वह इतनी आश्चर्यजनक नहीं है जितनी कि समझी हो। जब बुखार आने को होता है तो कुछ समय पहले देह टूटने लगता है। बच्चा पैदा होने से नौ मास पहले स्त्री का पेट बढने लगता है। आंखे जब दुखने लगती है तो कुछ समय पहले पूर्व लक्षण प्रकट होने लगते है। दांत गिरने से पहले उनका हिलना शुरू हो जाता है इसी प्रकार पूर्व लक्षणों के द्वारा मनुष्य का भविष्य भी जाना जा सकता है जैसी आंतरिक दशा होती है। बाह्म परिस्थितियां उसके अनुसार ही प्राप्त होकर रहती है।

हाथो की रेखाओं पर आप विशेष रूप से ध्यान दे तो आपको

शेष पेज 16 पर.....

अक्षय तृतीया

पवन कुमार मेहरोत्रा
ज्योतिषप्रभाकर एवं अंक विशारद
नज़र दोष विशेषज्ञ

वैशाख शुक्ल पक्ष तृतीया को अक्षय तृतीया कहते है। पुराणों के अनुसार इसी दिन त्रेता युग का आरम्भ हुआ था। इस वर्ष यह त्यौहार कृतिका नक्षत्र एंव सौभाग्य योग में पड़ने के कारण इसका विशेष महत्व रहेगा। यह तिथि एक स्वयं सिद्ध मुहूर्त है। इस दिन हुये दान और स्नान जप एंव यज्ञ सभी कर्मो का फल अनंत होता है। सभी कार्य अक्षय हो जाते है। अक्षय तीज अर्थात इसमें किया जाने वाला हर कार्य अक्षय हो जाता है। इस दिन हर कार्य में सिद्धि मिलती है। अनादि काल से पूर्वज इस तिथि को बड़ी ही श्रद्धा और विश्वास से मनाते है।

इस दिन श्री परशुराम जंयती भी मनाई जाती है। परशुराम जी का जन्म प्रदोष काल में हुआ था। अक्षय तृतीया बड़ी पवित्र और महान फल देने वाली होती है। इस लिये इस दिन सफलता की आशा से व्रतोत्सवादि के अलावा वस्त्र, शस्त्र एंव आभूषण इत्यादि बनवाये या धारण किये जाते है।

इस दिन स्वर्गीय आत्माओं की प्रसन्नता के लिये जल, कलश, पंखा, खडाऊ, ककडी, खरबूजा आदि फल शक्कर तथा स्वर्ण मिष्ठान, घृतादि पदार्थ किसी ब्राह्मण को दान दे वे इसी दिन चार धामों में उल्लेखनीय बद्री नारायण के दरवाजे खुलते है। इस दिन भक्त जनों को बद्री नारायण जी का चित्र सिंहासन पर विराजमान कर मिश्री तथा भिगी चने की दाल का भोग लगाना चाहिये। इस दिन गंगा स्नान का विशेष महत्व है। भगवान श्री कृष्ण का कथन है कि इस दिन स्नान, जप तप होम, पितृ तर्पण और दान से सब अक्षय हो जाते है।

पूजन विधि विधान इस दिन भगवान श्री विष्णु जी, लक्ष्मी जी एंव भगवान श्री कृष्ण का पूजन किया जाता है। विधि विधानानुसार भगवान का पूजन तुलसीदल चढाकर एंव धूप दीप, अक्षत फूल आदि से करने के पश्चात् भीगी चने की दाल का भोग अवश्य लगायें। इसमें मिश्री भी मिला सकते है। जौ का इस दिन विशेष महत्व बताया गया है क्योकि जौ को सभी धान्यों का राजा माना जाता है। व्रत के दिन चीनी गुड़ एंव सत्तू के दान एंव सेवन का विधान है।

हमारे पूर्वज इस दिन अपने शुभकार्य करते हुए आ रहे है। इस दिन झूठ न बोले, क्रोध न करे। यह तिथि मनुष्यों को संघर्षी और गरीबी से उबार ने वाली तथा दैहिक भौतिक तापों से शांन्ति दिलाने वाली तिथि है। अतः इस तिथि में दान पुण्यादि का अवश्य ही पालन करना चाहिये।

इस दिन भगवान परशुराम जी का भी पूरे विधि विधान से पूजन करने का विधान है। स्वर्ण आभूषण भी इस दिन खरीदने का विधान है।

❋❋❋

रचनाएँ आमंत्रित है

प्रिय पाठकों,

भविष्य निर्णय पत्रिका आपकी अपनी पत्रिका है। इस पत्रिका की विषय सामग्री को और रूचिकर बनाने हेतु रचनाएँ आमंत्रित की जाती है जिसमें ज्योतिषीय उपायों से प्राप्त परिणाम, आर्युवैदिक चिकित्सा के नुस्खे, व्यायाम प्राणायाम कैसे करें, मुद्राओं से लाभ, व्यवहारिक विज्ञान, भारतीय संस्कारो की स्वीकार्यता, सामाजिक –पारिवारिक हित के लेख, सच्चे संस्मरण आदि हो सकते है।

आप अपनी मौलिक रचनाएँ नीचे दिए गए पते पर, ई. मेल पर या व्हाटस ऐप पर अपनी फोटो सहित भेज सकते है।

हमारा पता है– भविष्य दर्शन, शाह सिनेमा के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा। पिन : 282002 मों. 9719666777

ई.मेल– pushpit_aayu1910@yahoo.co.in

Free services offered by us on our website www.bhavishydarshan.in

1. Horoscope Making
2. Match-Making
3. Lal Kitab Predictions
4. Successful Name
5. Baby Names
6. Favourable Gems
7. Panchang
8. Calender
9. Bi-monthly Magzine
10. Daily/Yearly Rashiphal
11. Vastu Remedies
12. Details of Yantra/Mantra

Connect With Us

and get 15% discount*

*valid for a single user

ब्रहममुहूर्त में जागने से फायदे

पुष्पित पारासर
दैवज्ञ शिरोमणि, ज्योतिष ऋषि ,
वास्तु ऋषि, अंक विशारद, हस्ताक्षर
विशेषज्ञ, नजर–टोना विशेषज्ञ

हिन्दु धर्मानुसार जीवन में सुखद और बेहतर नतीजो की प्राप्ति के लिए प्रतिदिन एक खास वक्त में जागना बहुत ही शुभ माना गया है। यह विशेष समय ब्रह्ममुहूर्त कहलाता है।

दरअसल, ब्रह्ममूहूर्त का धार्मिक, आध्यात्मिक, मानसिक व शारीरिक सभी नजरिए से बहुत महत्व माना गया है। हिन्दु ऋषि मुनियों, योग गुरूओं के अनुसार अगर कोई भी इंसान जीवन के हर क्षेत्र में मनवांछित परिणाम चाहता है तो वह नित्य ब्रह्म मुहूर्त में जागना शुरू करें, उसे निश्चित ही बेहतर नतीजे प्राप्त होंगें।

आम भाषा में ब्रह्म मुहूर्त का समय सुबह सूर्योदय से पहले चार पांच बजे के बीच का माना जाता है। किंतु हमारे धर्म शास्त्रों के अनुसार रात के आखिरी प्रहर का तीसरा हिस्सा या चार घड़ी तड़के तक ही ब्रह्ममुहूर्त होता है।

मान्यता है कि ब्रह्ममुहूर्त में जागकर अपने इष्ट देव की ध्यान पूजा, अध्ययन और किसी भी शुभ कर्मो को करना शुभ होता है। कहते है कि इस समय ईश्वर ज्ञान, विवेक, सुख, शांति, सद्बुद्धि, निरोग और सुंदर शरीर प्रदान करते है। इस समय भगवान की पूजा अर्चना के बाद दही, घी, आईना अपने माता पिता पत्नी बच्चों और फूलमाला के दर्शन भी बहुत पुण्य प्रदान करते है।

ब्रह्म मुहूर्त में वेद मन्त्रों के उच्चारण से वातावरण बहुत शुद्ध हो जाता है और मन को असीम शांति एंव पुण्य की प्राप्ति होती है। बाल्मीकि रामायण के अनुसार श्री हुनमान जी माता सीता को ढूंढते हुए ब्रह्ममुहूर्त में ही अशोक वाटिका पँहुचे थे, जहां पर उन्होने वेदों के मंत्र उच्चारण की आवाज सुनी थी और उनका मन प्रफुल्लित हो गया था।

अच्छी सेहत मानसिक एंव शारीरिक दृढता पाने के लिए भी ब्रह्ममुहूर्त सबसे उपर्युक्तसमय है क्योकि इस समय वातावरण में प्राण वायु, आक्सीजन की मात्रा अधिक होती है। इससे व्यक्ति का पूरा शरीर शुद्धता और ऊर्जा से भर जाता है। उसका दिमाग भी शांत और स्थिर रहता है व्यक्ति को ना केवल निरोगी शरीर ही प्राप्त होता है वरन उसकी आयु में भी वृद्धि होती है।

इस तरह युवा पीढी शौक मौज या आलस्य के कारण देर तक सोने के बजाय, इस खास वक्त का फायदा उठाकर बेहतर सेहत सुख, शांति और नतीजों को पा सकती है।

हिन्दू धर्मशास्त्रो में सुबह के सुकूनभरे वक्त में जीवन को साधने के लिए ही स्नान का बड़ा महत्व बताया गया है। यहां तक कि रोग या किसी लाचारी में भी कई विकल्पो के साथ स्नान करना तन ही नही मन के कलह रूपी ताप को भी कम करने वाला बताया गया है। पौराणिक मान्यता है कि श्रीहरि विष्णु के आदेश से सूर्योदय से अगले 6 दंड यानी लगभग ढाई घंटे की शुभ घड़ी तक जल मे सारे देवता व तीर्थ वास करते हैं इसलिए सुबह तीर्थ स्नान से सभी पापो का नाश व उनसे रक्षा भी होती है। खासकर संक्राति या जैसे सूर्य भक्ति या विष्णु भक्ति के शुभ दिनों में तो सुबह नहाए बिना धार्मिक कार्य दोषपूर्ण ही माने गये है।

सरल शब्दो में मतलब है कि सुबह स्नान करने से अनेको गुण प्राप्त होते है। इनमें पहला है रूप अर्थात सौंदर्य।

इसके अतिरिक्त शारीरिक बल, ज्ञान ऊर्जा, मानसिक दृढता, शुद्धता, पवित्रता, बुद्धि निर्णय क्षमता, यश कीर्ति और बेहतर स्वास्थ्य की भी प्राप्ति होती है।

क्योकि शुभ घड़ी अच्छे वातावरण में नित्य स्नान से तन निरोगी होने के साथ साथ मन मस्तिष्क भी ऊर्जावान रहता है। इसलिए इससे न केवल इंसान की उम्र बढती है। वरन शुभ विचारो के उदय होने से भाग्य देवता भी मेहरवान होते है और व्यक्ति को जीवन में सुख समृद्धि की प्राप्ति होती है।

कहा जाता है कि यह समय देवताओं का समय होता है इस समय देवता सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में अपनी कृपा बरसाते है। नित्य ब्रह्म मुहूर्त में जागने वाले व्यक्ति को अपनी पूजा अपनी प्रार्थना अपनी योजनाओं का फल अति शीघ्र प्राप्त होता है उसका अन्नत करण शुद्ध और निर्मल रहता है उस पर ईश्वर की सदैव कृपा बनी रहती है। अतः स्वस्थ शरीर स्वस्थ मस्तिष्क पवित्र विचारों सुख समृद्धि यश कीर्ति और ईश कृपा प्राप्ति के लिए प्रत्येक मनुष्य को ब्रह्म मुहूर्त में अवश्य ही जागना चाहिए।

प्रिय पाठको! यदि आपको इस प्रयोग से कुछ भी लाभ प्राप्त हो, तो न केबल मुझे वरन् अपने साथियों को भी इस प्रयोग के बारे में अवश्य बताएं।

❋❋❋

ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्र सीखिये
प्रमाण पत्र अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ (पंजी.) नई दिल्ली द्वारा
भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान
भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, एम. जी. रोड़,
आगरा। फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719666777
ई मेल : mail@bhavishydarshan.in

स्वागतम नवसंवत्सर- 2072

डा. (श्रीमती) कविता बंसल
ज्योतिषाचार्य, वास्तुशास्त्राचार्य, अंक विशारद
प्रवक्ता - अखिल भारतीय-ज्योतिष संस्थान संघ
मो.- 9219577131

ब्रह्मा पुराण में कहा गया है **चैत्र मासि जगद् ब्रह्मा संसर्ज प्रथमे हानि शुक्ल पक्षे समग्रे तुतदा सूर्योदये सति।**

21 मार्च से चैत्र मास का शुक्ल पक्ष प्रारंभ हो गया है। जो हिन्दू नवसंवत्सर 2072 का पहला महीना है। इसका अर्थ है कि विक्रमी संवत ग्रेगेरिय कैलेंडर से 57 बर्ष आगे चल रहा है। आज ही के दिन 1 अरब 95 करोड़ 58 लाख 85 हजार 1085 वर्ष पूर्व दुर्गा जी ने सभी प्राणियों के कारण शरीर ब्रह्मा जी को सौप कर सृष्टि की रचना करने की आज्ञा दी और ब्रह्मा जी ने आज ही के दिन सृष्टि की रचना की। इसी दिन घरों में ईशान कोण में मंगल सूचक घट स्थापित किया जाता है और श्री दुर्गा सप्तशती के पाठ प्रारंभ होते है। इसी चैत्र मास शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को सतयुग में भगवान विष्णु जी ने मत्स्य रूप में अवतार लिया था। कालांतर में जब हमारा भारत शकों के अधीन हो गया तो उन्होने इस सम्वत्सर व्यवस्था को समाप्त कर दिया, जिसे सम्राट विक्रमादित्य ने 2072 पूर्व वर्ष पुर्नस्थापित किया तथा तब से यह विक्रमी सम्वत का प्रथम दिन कहलाया।

हमारी कालगणना अति वैज्ञानिक- रोम शासक जूलियस सीजर के पहले ईस्वी वर्ष में 10 मास हुआ करते थे। जूलियस सीजर ने अपने नाम पर जुलाई मास और संत अगस्त के नाम पर अगस्त मास जोड़कर भारतीय पद्धति के अनुसार 12 मास कर लिए। पश्चिमी वर्ष मान्यता के आधार पर है जबकि हमारी सारी काल गणना आकाशीय नक्षत्रों पर आधारित है हमारी अपनी काल गणना एक सेकेड के 33750 वे भाग त्रुटि नाम से आरम्भ होती है। जो वेघ, लव, निमेष, क्षण, काष्ठा, लघु, अहोरात्र पक्ष (शुक्ल व कृष्ण) मास, ऋतु, अयन, उत्तरायण और दक्षिणायण और वर्ष तक पंहुचाती है। आगे कलयुग, द्वापर, त्रेता, सतयुग, चतुर्युगी, मन्वन्तर कल्प और प्रलय तक का हिसाब भी है।

पहली जनवरी को मनाया जाने वाला नववर्ष यूरोपीय सभ्यता के ग्रेगेरियन कैलेंडर के अनुसार होता है। लेकिन हिन्दू विक्रमी संवत् के अनुसार हम भारतीयों के नववर्ष का प्रारंभ चैत्र शुक्ल पक्ष एक से होता है। दैनिक कार्यो में भले ही हम दिन सप्ताह मास और वर्ष की गणना में अग्रेंजी तिथियों का प्रयोग करते हो, पर धार्मिक अनुष्ठानों, मांगलिक कार्यो, व्रत, उपवास, शादी विवाह, तीज त्यौहार पर्वो की तिथियां विक्रम संवत वर्ष प्रतिपदा के अनुसार ही निर्धारित होती है।

चैत्र शुक्ल- चैत्र शुक्ल एक विक्रम संवत की तिथि से अनेक प्रमुख घटनाएं जुडी है जैसे सृष्टि का प्रारंभ दिवस, श्री दुर्गा की उपासना, नवरात्रि व्रत-पूजन का प्रारंभ दिवस, भगवान श्री रामचंद्र जी का राज्याभिषेक, सम्राट विक्रमादित्य का विक्रमी संवत प्रारंभ, युधिष्ठिर का राज्याभिषेक, युगाब्ध संवत प्रारंभ, सिख परंपरा के द्वितीय गुरू अंगद देव जी का जन्म, वरूण अवतार झूलेलाल जयंती, आर्य समाज का स्थापना दिवस, शालिवाहन शक संवत, राष्ट्र के भविष्य दृष्टा डॉ केशव बलिराम का जन्मोत्सव। सनातन परंपरा के अनुसार नवसंवत्सर सावन, चंद्र और सौर माने गए है। सावन में 360 दिन चांद्र मे 354 दिन और सौर मे 365 दिन होते हैं। चैत्र मास प्रकृति का श्रृंगार है। चैत्र मास की प्रतिपदा को ब्रह्माजी ने प्रवरा अर्थात् सवोत्तम कहा। सूर्य मे अग्नि और तेज है तो चन्द्रमा में शीतलता शांति और समृद्धि। अस्तु नववर्ष का प्रारंभ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से माना गया। चैत्र से लेकर बैसाख तक भारत के अलग अलग राज्यों में उनकी मान्यताओं के अनुसार नववर्ष तथा अन्य विशेष उत्सव मनाए जाते है। तो आओ शामिल होते है भारत की खुशियों में।

नवरेह (जम्मू कश्मीर)- चैत्र नवरात्र के प्रथम दिन जम्मू कश्मीर में सप्तऋषि संवत के अनुसार नवरेह नामक नववर्ष उत्सव मनाया जाता है। इस दिन कश्मीरी पंडित विचार नाग झरने में पवित्र स्नान करने के बाद नये वस्त्र पहनकर भगवान को अन्न तथा उससे बने व्यंजनों का भोग लगाते है। इस दिन एक बड़ी थाली में धान अथवा चावल मौसमी फल, मेवे, कलम-दवात तथा सोने और चांदी के सिक्के रखकर दूसरी थाली में ढक दिया जाता है। अगली सुबह परिवार का सबसे छोटा सदस्य इस थाली को लेकर मुखिया के पास जाता है जो थाली से ढक्कन हटाकर सभी सदस्यों को दिखाता है। मान्यता है कि ऐसा करने से परिवार में वर्षभर समृद्धि, सुख तथा विद्या में वृद्धि होती है।

वैसाखी (पंजाब)- वैशाखी का नाम सुनते ही पांव अपने आप थिरकने लगते है। मन में गूंजने लगती है ढोल की थाप। भांगड़ा नृत्य के साथ मनाया जाने वाला यह नववर्ष उत्सव पंजाबियों के लिए कृषि वर्ष का ही प्रारंभ है। इसी दिन सिक्खों के दसवें गुरू श्री गुरू गोविन्द सिंह जी महाराज ने खालसा पंथ की नींव रखी थी। इस दिन पंजाबी लोग गुरूद्वारे में जाकर माथा टेकते है। फिर प्रारंभ होता है उल्लास और उत्साह से भरपूर पर्व। भारतीय इतिहास का प्रसिद्ध जलियांवाला बाग कांड भी बैसाखी के दिन ही हुआ था।

गुडी पडवा (महाराष्ट्र)- चैत्र नवरात्र के प्रथम दिन मराठी लोग गुड़ी पड़वा पर्व मनाते है। इस दिन वे द्वार पर रंगोली सजाते है तथा नए साल का स्वागत करते हैं। मराठियों में इस दिन नीम को नई कोपलें खाने की परम्परा है। मान्यता है कि इससे वे वर्ष भर रोग मुक्त रहते है। गुड़ी पडवा के दिन मराठी लोग खिड़कियों पर रेशम नारियल आम की पत्तियों और फूलों से लिपटे बांस में

शेष पेज 18 पर.....

खिडकियों के वास्तु दोष करते दाने दाने का मोहताज

पं. अजय दत्ता
ज्योतिष एवं वास्तु परामर्शदाता

किसी भी भवन में हवा, रोशनी व बाहर देखने के लिये खिड़कियों का होना बहुत जरूरी होता है। ये खिडकियां भवन की आंखें होती है। वास्तुशास्त्र में भवन में बनी खिड़कियों से होने वाले शुभ अशुभ प्रभावों की जानकारियां मिलती है।

आजकल लोग घर बनाते वक्त इन खिड़कियों का ध्यान नहीं रखते है और कहीं भी बना देते है। खिड़कियां किस दिशा में बनी है. यह महत्वपूर्ण होता है। खिड़कियां सही जगह न बनाने के कारण परिवार के मुखिया की अपने बच्चों के साथ आपसी ताल मेल की कमी व परेशानियां रहती है तथा उनमें विवाद चलते है।

1. भवन के मुख्य द्वार के दायें बायें की खिड़कियां टूटी फूटी और पुरानी हों तो परिवार के माता पिता को स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों का सामना करना पड़ता है तथा उन पर आरोप लगते रहते है और विभिन्न प्रकार की परेशानियां होती है। बेटे बेटियों की पढाई लिखाई में भी इसका बुरा असर पड़ता है।

2. यदि मुख्य द्वार के दाहिनी और कोई खिड़की ना हो तो पुत्र संतान प्राप्ति में बहुत कठिनाई होती है। पुत्र संतान होने पर उसके जीवन में खतरनाक हादसा होने की संभावना बनी रहती है।

3. यदि मुख्य द्वार के बायें हाथ पर खिड़की ना हो तो कन्या संतान को उपरोक्त समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

4. यदि टी जंक्शन पर सीधे हाथ की खिड़की हो तो उस घर के पुरूषों एंव पुरूष संतान के लिये कठिन समय होता है। इसी प्रकार उल्टे हाथ की खिड़की हो तो घर की महिला और कन्या संतान के लिये कठिन समय होता है। यह कष्ट निर्भर करता है उन खिड़कियों की संख्या पर। इसलिये टी जंक्शन पर कभी भी खिड़की नही लगाना चाहिये।

5. यदि खिडकी में किसी प्रकार की सीधी लंबी लोहे या लकड़ी

शेष पेज 19 पर.....

ज्योतिष में रत्नों का महत्व

प्रवीणा पाठक
ज्योतिषाचार्य एवं वास्तु रत्न

कुंडली में विपरीत और निर्बल ग्रहों को शक्ति प्रदान करने के लिए और अनुकूल ग्रहों को और अधिक शक्तिशाली बनाने के लिए हमारे ऋषि मुनियों ने कई उपायों के बारे में विस्तार से बताया है, रत्नों का इसमें एक महत्वपूर्ण स्थान है।रत्नों का संसार अत्यंत प्राचीन और अद्भूत है। आचार्य वराहमिहिर द्वारा रचित कृति वृहद संहिता में रत्नो के बारे में व्यापक रूप से बताया गया है।

रत्नों के बारे में मणि माला ग्रन्थ में निम्न उल्लेख किया गया है।

माणिक्यम, तरणेः सुजात्यममल्म, मुक्ताफलम, शीतगोमाशहेयस्य च विद्रुमो, निगदितः सौम्यस्य गारूत्मतम्।
देवेज्यस्य च पुष्परागमसुराचार्यस्य, वज्रम, शनेनीलम, निर्म्मलयमन्ययोक्ष्य गदिते गोमेद वैदुर्यके।।

अर्थात ग्रहों के विपरीत होने पर रत्नों को धारण किया जाता है। सूर्य के लिए माणिक, चन्द्र के लिए मोती, मगल के लिए मूंगा, बुध के लिए पन्ना, गुरू के लिए पुखराज, शुक्र के लिए हीरा, शनि के लिए नीलम, राहु के लिए गोमेद और केतु के लिए लहसुनिया धारण करना चाहिए। वृहय संहिता के अनुसार लग्नेश, पंचमेश और नवमेश का रत्न धारण करना अत्यन्त शुभ और लाभमय होता है। लग्नेश का रत्न धारण करने से व्यक्ति के ओज और शारीरिक प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि होती है। वही नवमेश का रत्न धारण करने से भाग्योदय में लाभकारी होता है। कुछ ज्योतिष विद्वानों के अनुसार जन्म कुंडली में वर्तमान में जिस ग्रह की महादशा या अन्तर्दशा चल रही हो या दशानाथ ग्रह प्रतिकूल हो उसका भी रत्न धारण कराया जा सकता है। वही ज्योतिष शास्त्र में अष्टमेश का रत्न धारण नही करना चाहिए।

विभिन्न लग्नों के अनुसार रत्न

मेष लग्न के व्यक्ति मोती, माणिक, और पुखराज धारण कर

शेष पेज 18 पर.....

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 500/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 1100/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. **10039621088**, में जमा करा दे।

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा।
फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719005262
E-mail : mail@bhavishydarshan.in

Gaj Kesari

Varun Gupta
Jyotish Ratan
Agra

Gaj Kesari Yoga is one of the auspicious yogas in Vedic Astrology. Gaj Kesri both are the powerful and influential animals Gaj is the epitome of intelligence and knowledge. Gaj or Elephant does not have pride on his tremendous capabilties.

If this yoga is created in anyones chart, the person becomes Capable, Efficient, Get all luxurious Comforts and Conveniences & Occupies a higher position in his profession. The person may also be proficient in creative arts, arguments, debate and may be very intellectual. This yoga also gives the person, sharp intellect and prosperity. This yoga also helps in increase the longevity of the person.

Formation :

1. Jupiter should be in kendra from Moon or Jupiter should be in kendra from the Ascendant

In this yoga Jupiter should be in kendra from the Ascendant or Moon. If jupiter is aspected by auspicious planets, it gives auspicious results

Note : The position of jupiter in kendra from Moon is not so important

2. Jupiter should not be debeitated or in the enemy house. If Jupiter is in the enemy house or debiliated and the Gaj kesari Yoga is also created then the auspiciousness of this yoga may get affected If Gaj kesri yoga is created, Jupiter should not be retrograde or aspected by any malefic planet in the chart.

3. When Venus is in kendra from Moon

शेष पेज 19 पर.....

बुजुर्गों में पनपता अकेलापन

सुरेश अग्रवाल
आगरा

हमारे देश में लगभग साढे दस करोड़ बुजुर्ग है। स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ने के कारण उनकी औसत उम्र में इजाफा हुआ है। आमतौर पर 40 वर्ष की आयु के बाद लोग नियमित रूप से स्वास्थ्य की जाँच कराते है। इससे बीमारी का पता चल जाता है और इलाज समय पर शुरू हो जाता है। 60 वर्ष की आयु के बाद लोग काम से रिटायर हो जाते है पर उनकी जरूरतें बढ़ जाती है। बुनियादी जरूरतों के अलावा दवाओं का खर्च बढता है। यदि वे रिटायर होने के बाद अपना जीवन औसतन 80 वर्ष की आयु तक जिएंगे, तो इस 20 वर्ष की अवधि में उनकी जरूरतें कैसे पूरी होगी। स्त्रियां अपने पति से उम्र में छोटी होती है, इस कारण उनका जीवन भी लम्बा होता है। पति की अनुपस्थिति में मात्र 30 प्रतिशत फेमिली पेंशन राशि से, वे अपनी बुनियादी जरूरतें तक पूरी नहीं कर सकेगी– इस अहम् समस्या पर सरकार को ध्यान देना होगा।रोजाना लगभग 17 हजार से ज्यादा लोग साठ वर्ष की उम्र पार करते हैं, मगर स्वस्थ और तनाव मुक्त बुढापा जीने की उनकी तैयारी ना काफी है। समाज संक्रमण काल से गुजर रहा है। भारत में संयुक्त परिवारों को तरजीह दी जाती है। मगर जीवन स्थितियां बदल गई है। एक ही घर में है, मगर माता पिता के लिए समय नहीं है। बच्चे 10–12 घण्टे बाहर रहते है। घर आने के बाद उनकी घरेलू जिम्मेदारियाँ उन्हे घेर लेती है। कई बार बच्चों के मन में कसक भी उठती है कि वे माता पिता को समय नहीं दे पा रहे है। मगर समय उनके हाथ में है ही नहीं। दूसरी और बच्चों को महसूस होता है कि उनके माता पिता सक्षम और आत्मनिर्भर हैं वे अपनी देखभाल कर लेंगे। **उन्हें बुजुर्गो की समस्याएँ तब पता चलती है जब वे खुद उनकी उम्र के पड़ाव में पहुँचते है।** मशीनी होती जिन्दगी में संवेदनशीलता कम हो रही है। बच्चों को अपने परिवार की जिम्मेदारियों की ओर ज्यादा ध्यान रहता है बुजुर्गो की भावनाओं की ओर कम। माता पिता बेटों के साथ रहना चाहते हैं, क्योकि वे बेटे को ही अन्तिम समय का सहारा समझते है। **बेटे उन्हें प्रताड़ित भी करें, तो भी सहन कर लेते है।** अपने बेटों के खिलाफ जाने की बात सोचना भी उनके लिए

शेष पेज 17 पर.....

ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्र सीखिये
प्रमाण पत्र अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ (पंजी.) नई दिल्ली द्वारा
भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान
भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, एम. जी. रोड़,
आगरा। फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719666777
ई मेल : mail@bhavishydarshan.in

मानसिक संघर्ष के समाधान हेतु तीन साधन

श्रीमती मोहिनी पाराशर

उपाहं – उपाहं मन का **प्रथम भाग** है जो व्यक्तिगत जन्मजात तत्व है। इसमें केवल वही आदतें होती है जो जन्म से हो। एक नवजात शिशु में उपाहं की आदतों की भरमार होती है। उपाहं की आदतें आनन्द व सुख को प्रदान करने वाली होती है चाहे फिर समाज के लिए गलत हो या सही। इसमें उचित अनुचित विवेक अविवेक समय स्थान आदि से कोई मतलब नहीं होता है। इसका सम्बन्ध वास्तविकता से नहीं होता है वरन् अपनी इच्छाओं से होता है। उपाहं दो क्रम को अपनाता है।

सहज प्रक्रिया– सहज प्रक्रिया से उपाहं तनाव उत्पन्न करने वाले स्त्रोत के प्रति अनुक्रिया कर तनाव को दूर करते है। जैसे खासना, छीकंना, आँखें मिचकाना आदि। उदा. हमें किसी बडे के द्वारा दिया गया कार्य यदि पसंद न आये या हमे न करना हो और हम मना न कर पाये तो हम आंखे मिचका कर या विभिन्न तरह के चेहरे बनाकर तनाव को दूर करते है।

प्राथमिक प्रक्रिया– प्राथमिक प्रक्रिया में व्यक्ति उसको सोचता है जिससे व्यक्ति का तनाव या संघर्ष दूर होता है। **उदाहरण:** एक बच्चा खिलौने से खेलना चाहता है लेकिन उसे खिलौना नहीं मिल पा रहा है तो बह उस खिलौने की कल्पना मात्र से इच्छा की पूर्तिकरता है व मानसिक तनाव को दूर करता है।

सावधानियाँ– बच्चों में बहुत सी आदतें जन्म से होती है। इसलिए माता पिता को चाहिए कि बच्चों को भौतिक सुविधाएं देने के साथ या उनकी इच्छाएं पूरी करने के साथ–2 सही और गलत में अंतर बताये जो उन्हें वास्तविकता सें जोडे क्योकि बच्चे देख कर ही सीखते है। इसलिए बच्चों के सामने उचित कार्य या सही व्यवहार करें।

अंह– ये मन का **दूसरा भाग** है। यहां अहं से तात्पर्य व्यक्ति के अंहकार या घंमड से नहीं है बल्कि मनोविज्ञान में अंह का अर्थ स्वंय के विकास से है परंतु सामाजिक नियमों एंव नैतिक मूल्यों से उसकी इच्छाओं की पूर्ति नहीं हो पाती है जिसके कारण उसमें निराशा का अनुभव होता है। तब कुछ समय बाद उसका सम्बन्ध वास्तविकता से होता है इस प्रक्रिया के द्वारा विकास होता है। मनोविज्ञान में अंह का सम्बन्ध वास्तविकता से होता है जिसके कारण व्यक्ति निर्णय लेने में सक्षम होता है। व्यक्ति वातावरण में होने वाले व्यवहार के प्रति असुविधा कर निर्णय लेना सीख लेता है।

सावधानियां– माता पिता या घर के अन्य बड़े सदस्यों को चाहिए कि वे बच्चों की वहीं इच्छाएं पूरी करें जो उनके लिए आवश्यक व जरूरी हो। जो उनके व्यक्तित्व व बढ़ती उम्र के विकास में सहायक हो।

पृथ्वी मुद्रा

पं. विष्णु पाराशर
ज्योतिष शास्त्राचार्य एवं
कर्मकाण्ड विशेषज्ञ

हमारा शरीर पाँच तत्वों से मिलकर बना है। अग्नि, पृथ्वी, वायु, जल एंव आकाश। इन तत्वों में से पृथ्वी तत्व से शरीर का ढाँचा तैयार होता है। इस तत्व की अधिकता से शरीर बढ़ता है। तथा कमी होने पर शरीर घटता है। पृथ्वी तत्व को नियन्त्रित रखना अति आवश्यक होता है क्योकि शरीर बढ़ने व घटने दोनों ही स्थिति में मनुष्य न तो स्वस्थ्य रह सकता है औरन ही अधिक परिश्रम कर सकता है। पृथ्वी मुद्रा से मनुष्य पृथ्वी तत्व की कमी को दूर कर सकता है।

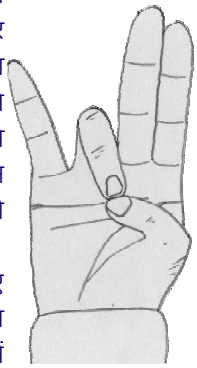

विधि– पृथ्वी मुद्रा को करने के लिए प्रातः काल व साँयकाल शुद्धचित्त व शान्त स्वभाव होकर किसी भी आसन में बैठे जायें तथा दोनों हाथों के अंगुष्ठ को अनामिका अंगुली से मिलाये तथा लम्बी गहरी सांस ले व धीरे धीरे छोड़े। सांस लेते हुए भावना बनायें कि आपके अन्दर सकारात्मक पृथ्वी तत्व के गुण आ रहे है तथा सांस बाहर करते समय नकारात्मक ऊर्जा शरीर से बाहर हो रही है।

लाभ– यह मुद्रा शारीरिक दुर्बलता दूर करती है। यह मुद्रा शरीर का बजन बढाने में भी सहायक होती है। शरीर में स्फूर्ति, क्रान्ति एंव तेजास्विता आती है। यह मुद्रा पाचन तन्त्र को भी मजबूत करती है। मस्तिष्क में सकारात्मक विचार, संकुचित विचारों में कमी तथा दिमाग में शान्ति का अनुभव होता है। लम्बे अभ्यास के बाद शरीर में अपूर्व प्रसन्नता का आभास होता है तथा विटामिन की कमी को यह मुद्रा दूर करती है।

नोट– इस मुद्रा को 15 से 20 मिनट करें एक समय में तथा उम्र व शरीर अनुपात में अधिक वजन वाले व्यक्ति इस मुद्रा को न करें। ❋❋❋

पराहं– यह मन का **तीसरा भाग** है। जैसे जैसे बच्चा बड़ा होता है वह अपना तादात्म्य माता पिता के साथ करने लगता है और परिणामस्वरूप वह धीरे धीरे सीख लेता है क्या उचित है और क्या अनुचित। इस तरह सीखने से पराहं के विकास की शुरूआत है। पराहं व्यक्तित्व का नैतिक स्वरूप है। जो व्यक्ति को यह बतलाता है कि कौन सा कार्य गलत है। बदलते समाज में नेट का प्रचलन बढ़ता जा रहा है। बच्चे फेसबुक और वॉट्सएप के द्वारा खुद को तादात्म्य करते है जिसका बुरा प्रभाव बच्चों के मस्तिष्क पर पड़ रहा है जिसके कारण बच्चों की स्मृति कम होती जा रही है।

सावधानियां– बदलते समाज मे बच्चे खुद का तादात्मय

शेष पेज 19 पर.....

16 अप्रैल - 15 मई

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ–आर्थिक लाभ होकर भी हानि भय लगा रहेगा नई योजनायें बनायेंगे। पत्नि को भी शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। यात्रा का सुख मिलेगा। गुप्त शत्रु से सावधान रहें।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– नेत्र रोग का भय रहेगा। कारोबार में रुकावटें आने की संभावना रहेगी। सन्तानपक्ष अच्छा रहेगा। खर्चे अधिक होंगे। प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– इस माह में स्वास्थ्य खराब रहेगा। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। आर्थिक परेशानियाँ लगी रहेंगी। इस माह में उदर विकार संबंधित रोग से पीड़ित होने की संभावना रहेगी।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– इस माह में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। धन लाभ होने की संभावना रहेगी। ससुराल से पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। खर्चे अधिक होंगे।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– खर्चे अधिक होंगे। इस माह में स्थान परिर्वतन होने की संभावना रहेगी। धन लाभ होने की संभावना रहेगी। निजीजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। गुप्त शत्रु से सावधान रहें।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। घरेलू परेशानी लगी रहेंगी। कार्य से निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। अपमान होने का भय रहेगा। स्वास्थ्य उत्तम होने की संभावना रहेगी।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– इस माह में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पुत्र को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। घरेलू परेशानी लगी रहेंगी। यात्रा में कष्ट से बचें। अर्थ लाभ होकर भी हानि का भय रहेगा।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– निजी लोगों से परेशानी होने की संभावना रहेगी। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। सन्तानपक्ष अच्छा रहेगा। मास के अन्त तक खर्चा अधिक होगा।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- निजीजन से अनबन होने की संभावना रहेगी। पत्नि की तरफ से चिन्ता रहेगी। गुप्त शत्रु से बचें। कारोबार में रुकावटें आयेंगी। शत्रु कमजोर रहेंगे। मास के अन्त तक खर्चा अधिक होगा।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– नेत्र रोग का भय रहेगा। कारोबार में हानि होने की संभावना रहेगी। जमीन-जायदाद संबंधी परेशानी कम होंगी। धन लाभ होकर हानि होने का भय रहेगा। अपमान होने का भय रहेगा।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- इस माह में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। घरेलू परेशानी लगी रहेंगी। कार्य से निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। व्यवसाय ठीक रहेगा।

मीन(PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची- व्यवसाय मधयम रहेगा। अपमान होने का भय रहेगा। इस माह में स्वास्थ्य उत्तम होने की संभावना रहेगी। मास के अन्त में कुछ परेशानियां उत्पन्न होगी। नई योजनायें बनायेंगे। अपमान होने का भय रहेगा।

पुष्पित पारासर
दैवज्ञ शिरोमणि, ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि,
अंकविशारद, हस्ताक्षर विशेषज्ञ, नजर दोष विशेषज्ञ

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

अप्रैल	मई
16. प्रदोष व्रत **18.** अमावस्या(स्नान/दान) **21.** श्री विनायक चौथ, अक्षय तीज **23.** श्री आद्य शंकराचार्य जं. **24.** श्री रामानुजाचार्य जं. **26.** श्री बगलामुखी जं. **27.** सीता नवमी **29.** मोहिनी एकादशी	**1.** प्रदोष व्रत, श्री नरसिंह जयंती, प्रदोष व्रत, वि. मजदूर दि. **3.** पूर्णिमा व्रत 4 बुद्ध पूर्णिमा **5.** श्रीनारद जयंती **7.** श्री गणेश चतुर्थी व्रत, रविन्द्र नाथ टैगोर जं. **11.** शीतलाष्टमी पूजन **14.** अचला (अपरा) एकादशी व्रत 15.प्रदोष व्रत

गृहारम्भ मुहूर्त

अप्रैल –30 मई – 4,

गृह प्रवेश मुहूर्त

अप्रैल – 23, 30 मई – 1, 2, 4,

दुकान शुरू करने का मुहूर्त

अप्रैल – 23, 25, 26, 29, 30

मई – 1, 2, 4,

नामकरण संस्कार मुहूर्त

अप्रैल – 17,

मई – 1, 6, 13,

सर्वार्थ सिद्ध योग

अप्रैल	मई
17 ता. 19:46 से 29:44 तक 19 ता. सू.उ. से 15:08 तक 21 ता. सू.उ. से 11:56 तक 22 ता. 05:44 से 29:42 तक 24 ता. 12:05 से 29:39 तक 26 ता. सू.उ. से 15:54 तक	06 ता. सू.उ. से 12:40 तक 10 ता. सू.उ. से 11:56 तक 11 ता. सू.उ. से 10:54 तक 15 ता. सू.उ. से 14:40 तक

मासिक राशिफल

16 मई – 15 जून

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ–नई योजना से लाभ की प्राप्ति होगी। नेत्र कष्ट जैंसे रोग से ग्रस्त रहेंगे। सन्तान पक्ष से चिन्ताए बनी रहेगी। स्थानान्तर का विचार होगा।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– इस माह में प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। क्रोध में वृद्धि होने की संभावना रहेगी। मास के अन्त मे आपको राज भय रहेगा। यात्रा में कष्ट से बचें।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– स्वास्थ्य श्रेष्ठ रहेगा। धन लाभ होने की संभावना रहेंगी। आपको अपनी पत्नि से लाभ की प्राप्ति होगी। परिवार में तनाव का वातावरण रहेगा।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– धन की परेशानी एवं चिन्ता रहेगी। पत्नि का पूर्ण सुख एवं पत्नि पक्ष से लाभ प्राप्त होगा। कारोंबार में लाभ की प्राप्ति रहेगी। स्थानान्तर का विचार होगा।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– आर्थिक लाभ होगा परन्तु फिर भी हानि का भय रहेगा। कारोबार में रुकावटें आने की संभावना रहेगी। बन्धु सुख प्राप्त होगा। सन्तान पक्ष अच्छा रहेगा।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। पति–पत्नि में वैचारिक मतभेद रहने की संभावना रहेगी। सन्तानपक्ष से सुख की प्राप्ति होगी। यात्रा का सुख प्राप्त होगा।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– इस माह में उदर विकार होने की संभावना रहेगी। नौकरी में रुकावटें आने की संभावना रहेगी। सन्तान सुख मिलेगा। शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे। हानि का भय रहेगा।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू–पुत्री को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। इस माह में शत्रु पक्ष कमजोर रहेगा परन्तु गुप्त शत्रु से बचें। फालतू की चिन्ता में डूबे रहेगें। कारोंबार में लाभ की प्राप्ति रहेगी।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- नई–नई योजनाओं से आपको हानि प्राप्त होगी। मित्रों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। निजीजन को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। नौकरी में रुकावटें आयेंगी।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– इस माह में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। आपकी आर्थिक स्थिति मजबूत रहेगी। मानसिक अशांति बनी रहेगी। गुप्त शत्रु से भय रहेगा।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- इस मास में धन लाभ होने की संभावना रहेगी। स्थान परिवर्तन का विचार बनेगा। पत्नि की तरफ से चिन्ता रहेगी। मास के अन्त में खर्चे अधिक होंगे।

मीन (PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची- सम्पत्ति का सुख प्राप्त होगा। इस मास में वायुविकार रोग होने की संभावना रहेगी। घरेलू परेशानिया निरंतर रहेगी। धन हानि होने की संभावना रहेगी। नौकरी में रुकावटें आने की संभावना रहेगी।

पुष्पित पारासर
दैवज्ञ शिरोमणि, ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद, हस्ताक्षर विशेषज्ञ, नजर दोष विशेषज्ञ

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

मई	जून
18.अमावस्या, वट सावित्री व्रत पू. **21**.श्री गणेश चतुर्थी व्रत, रम्भा तीज व्रत, राजीव गांधी पु.ति. **24**.स्कन्द षष्ठी **25**.भानु सप्तमी **26**.दुर्गाष्टमी (धूमावती जं.) **27**.माहेश्वरी नवमी, पं. नेहरू पु. दि. **28**.गंगा दशहरा **29**.निर्जला एकादशी व्रत **30**.चम्पक द्वादशी **31**.प्रदोष व्रत	**1**. पूर्णिमा, वट सावित्री व्रत, संत कवीरदास जं. **3**. हरगोविन्द सिंह जं. **5**. श्री गणेश चतुर्थी व्रत **10**. शीतलाष्टमी (सीताष्टमी) व्रत **12**. योगिनी एकादशी व्रत **14**. प्रदोष व्रत

ग्रहारम्भ मुहूर्त

मई - 20, 23, 29, 30

जून– नहीं है।

गृह प्रवेश मुहूर्त

मई – 20, 23, 28, 29, 30

जून – नही है।

दुकान शुरू करने का मुहूर्त

मई – 20, 23, 28, 29, 30, 31

जून – नही है।

नामकरण संस्कार मुहूर्त

मई –20, 28, 29 **जून**– 12,

सर्वार्थ सिद्ध योग

मई	जून
18 ता. 21:53 से 29:27 तक	01 ता. 19:19 से 29:23 तक
20 ता. सू.उ. से 20:45 तक	06 ता. 17:30 से 29:23 तक
21 ता. 21:08 से 22 ता. 22:14 तक	11 ता. 10:58 से 29:23 तक
30 ता. 16:30 से 29:23 तक	12 ता. सू.उ. से 29:22 तक
	15 ता. 06:26 से 29:27 तक

उतावलापन

(मामा की कलम से)

विजय शर्मा
आगरा

सर्वज्ञ चकवा बोला, महाराज! इसमें शंका न करें। दूरदर्शी बड़ा सज्जन है। वैसे भी मन्दबुद्धि कभी शंका नहीं करते हैं पर कभी सर्वत्र शंका करते हैं। वैसे भी कुमुदिनी को ढूंढने वाला चतुर हंस रात में सरोवर में तारों की परछाई को कुमुदिनी जानकर ठगा हुआ दिन में भी श्वेत कमलों को शंकावश नही लेता है। छल से छला गया संसार सत्य में भी बुराई की शंका करता है। दुष्टों से छले हुए चित्र वाले मनुष्य का सज्जनों में भी विश्वास नहीं रहता है। दूध से जला हुआ बालक दही फूंक मार मारकर खाता है। महाराज सामर्थ्य के अनुसार उसके स्वागतम् के लिए भेंट आदि तैयार कीजिए।

राजा हिरण्यगर्भ ने अपनी मन्त्री चकवे आदि को बुलाकर सभा की और परामर्श किया कि यह बात सही है कि नहीं। राजा को सन्देह था कि शत्रु राजा ने हम पर हमला किया और हमारे एक राज्य को जीत लिया फिर वह सन्धि क्यों करना चाहता है। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे?

राजा ने मन्त्री चकवे से परामर्श किया मन्त्री महोदय हमारी समझ में नहीं आ रहा कि शत्रु राजा ऐसा क्यो कर रहा है। इसमें उसकी कोई चाल तो नहीं है या कृपा कर रहा है।

चकवा बोला महाराज समझ में तो मेरी भी कुछ नहीं आ रहा कि राजा चित्रवर्ण ने क्या सोचकर गिद्ध मंत्री को भेजा है? महाराज मेरी समझ में तेा बात आ रही हें कि गिद्ध मंत्री से पहले बात की जायें, तभी कुछ बात का सुराग प्राप्त होगा ।

इतना कहकर चकवा गिद्ध के स्वागत के लिए द्वार पर गया और आदरपूर्वक अन्दर ले गया। बाद में राजा से मिलवाया। गिद्ध मन्त्री आसन पर बैठ गया। फिर चकवा बोला, मन्त्रीबर यहां का सब कुछ आपका है। अपनी इच्छानुसार भोगिए। चकवे ने गिद्ध मन्त्री के स्वागत में तरह तरह के भोज्य पदार्थ लगवा दिये थे। गिद्ध मन्त्री ने खूब खाया। खाते समय राजहंस ने आवभगत की सोचकर कहा गिद्ध महोदय आप सब अपना ही समझकर खाइये।

आप मेरी इतनी आवभगत न करें और मुझे अपना ही आदमी मानें। मै सन्धि के लिए आया हूं न कि विच्छेद के लिए। आप लोग तो मुझसे इस तरह बातें कर रहे हो, जैसे शत्रु राजा का दूत किसी युद्ध का संदेश लाया हो। चकवा तथा राजा आदि ने गिद्ध की बात सुनी उसे प्रसन्न मुद्रा में देखकर समझ गये कि गिद्ध सच में ही सन्धि के लिए आया है।

गिद्ध कहने लगा मेरे विचार से अब हमें आडम्बर की बातें न करके खुलकर बात करनी चाहिए। वैसे भी कहा गया है कि लोभी को धन से, अभिमानी को हाथ जोडकर, मूर्ख को उसका मनोरथ पूरा करके और पण्डित को सच सच कहकर वश में करना चाहिए। विनय से मित्र को मीठी बातों से बान्धवों को दानी को मान से स्त्री और सेवकों को धन से तथा चतुरता से आम लोगों को वश में करना चाहिए। अब सन्धि की बात करें राजा चित्रवर्ण बहुत प्रतापी है।

चकवा बोला, कैसे सन्धि करनी है वो तो कहिए।

राजहंस बोला सन्धियां कितने प्रकार की होती है।

बलवान शत्रु से घिर जाने पर जब कोई चारा न रहे तो समय निकालने और संकट टालने के लिए राजा को अपने शत्रु से सन्धि कर लेनी चाहिए।

गिद्ध दूरदर्शी तो था ही। उसे इतना ज्ञात था कि जितने भी वहां बैठे थे उनमें से किसी को भी इतना ज्ञान प्राप्त नहीं था। सब उसकी बात सुन रहे थे और सोच रहे थे कि गिद्ध महाराज को इतना ज्ञान कहां से प्राप्त हुआ है।

दूरदर्शी गिद्ध अब सन्धियों के प्रकार बताने लगा–

विद्वानों ने सोलह प्रकार की सन्धियां बतायी है।

कपाल,उपहार,संतान,संगत,उपन्यास,प्रतिकार,सुग्रीव,संयोग पुरूषान्तर अदृष्टनर,अदिष्ट,आत्मदिष्ट,उपग्रह,परिक्रमा, अधिछन्न,स्कन्धोपनेय

समान बली के मध्य की गई सन्धि कपाल कहलाती है जो कर या उपहार देने पर होती है, वह उपहार सन्धि कहलाती है। कन्यादान देने से जो मेल हो उसे संतान सन्धि तथा सज्जनों के साथ मित्रतावश मेल करने को संगत सन्धि कहते है।

सगत सन्धि किसी भी परिस्थति में नही टूटती। यह स्वर्ण की

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री,
असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक
मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं
भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान
भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

तरह उत्तम होने के कारण कांचन सन्धि के नाम से भी प्रसिद्ध है।

जब चतुर लोग कार्य सिद्ध के लिए स्वार्थवश मेल करते है। तो उपन्यास सन्धि होती है।

उसने मेरा भला किया मै उसका भला करूंगा इस दष्टि से की गयी सन्धि प्रतिकार सन्धि कहलाती है।

मैने दुख में उसका साथ दिया है वह भी मेरे दुख में देगा इस दृष्टि से की गई सन्धि सुग्रीव सन्धि कहलाती है।

संयोग संन्धि तब की जाती है जब एक लक्षय के लिए दो पक्ष मेल करके कार्यसिद्ध के लिए तत्पर होते है।

पुरूषान्तर सन्धि में दोनो पक्षों के सेनाधिकारी एक दूसरे की समय समय पर सहायता करते है।

अदृष्ट पुरूष सन्धि में एक पक्ष शर्त रखता है कि दूसरा पक्ष अकेले ही उसके काम को पूरा करेगा।

बलवान शत्रु को एक भाग देकर सन्धि करनी पड़े तो उसे अदिष्ट सन्धि कहते है।

आत्मदिष्ट सन्धि मे अपनी सेना देकर शत्रु को मनाना पड़ता है।

जब सब कुछ देकर प्राण बचाने के लिए मेल करना पड़े तो इसे उपग्रह सन्धि कहते है।

बचे हुए राज्य की रक्षा के लिए शत्रु को धन या खजाने का कुछ भाग देकर मेल करना पड़े तो इसे परिक्रमा सन्धि कहते है।

रत्न और स्वर्ण धरती देनी पड़े तो अधिछन्न सन्धि होती है।

भूमि की तमाम उपज शत्रु के हवाले करके राज्य बचाना पड़े तो उसे स्कन्धोपनेय सन्धि कहते है।

इनमें से एक दूसरे के उपकार की भावना से मैत्री भाव से बन्धुत्व जोड़कर और उपहार ले देकर की गयी चार सन्धियां उत्तम है। गिद्ध ने बताया मेरे विचार से उपहार सन्धि ही उचित है क्योकि मैत्री की सन्धि के अतिरिक्त अन्य सब सन्धियां उपहार सन्धि के ही रूप है।

आक्रमण करने वाला बलशाली होने के कारण तभी सन्धि को राजी होगा, जब उसे कोई उपहार मिलेगा। इसलिए उपहार को छोडकर कोई और सन्धि नहीं होती है।

राजा हिरण्यगर्भ बोले आप बहुत गुणी और पण्डित है आप ही बतायें कि हम क्या करें?

राजा ने गिद्ध से परामर्श लेने के उद्देश्य से और उसकी बुद्धि को परख कर उससे यह सवाल पूछा था। राजा समझता था कि अब हमारा मार्गदर्शन गिद्ध महाराज ही सही कर सकते है। यह सोचकर राजा हिरण्यगर्भ ने मन्त्री चकवे से सलाह की कि हमे शत्रु से किस प्रकार की सन्धि करनी चाहिए।

चकवे ने भी यह बात गिद्ध के ऊपर ही छोड दी। उसने राजा से कहा महाराज हमें सारी बात गिद्ध मन्त्री की ही मानने मे फायदा है।

तब राजा हिरण्यगर्भ ने गिद्ध से कहा मन्त्री हम चाहते है कि इस समय आप ही हमारा मार्गदर्शन करें यानी आप ही हमें बतायें कि कौन सी सन्धि हमारे लिए लाभकारी होगी।

शेष अगले क्रमांक में.....

❋❋❋

शेष पेज 6 से आगे.....

मालूम पडेगा कि वे घटती बढती रहती है। बहुत सी नई रेखाएं पैदा होती है और बहुत सी गायब हो जाती है। इस परिवर्तन को देखकर अनुभवी हस्त रेखा विशेषज्ञ व्यक्ति आसानी से पता लगा सकते है कि अमुक व्यक्ति की सक्षम परिस्थितियां किस दशा में चल रही है और उनके कारण निकट भविष्य में किस प्रकार की ब्राहम परिस्थितिया बनना संभव हैं। यह अनुमान कभी कभी कुछ गलत भी हो सकते है जिसके कारण अक्सर दो देखे जाते है

1. परीक्षक का सूक्षम बुद्धि तथा अनुभवी न होना

2. स्वभाव का इतना नया परिवर्तन जिसका अंकन रेखाओं पर ठीक प्रकार न हो पाया हो। स्वभाव में अचानक जबरदस्त परिवर्तन हो जाने पर भविष्य की रचना भी तुरन्त ही बदल जाती है। परन्तु हाथ की रेखायें इतनी जल्दी नही बदलती, उनके बदलने में कुछ देर लगती है। हाथ की रेखायें मुट्ठी बांधने का फल है या काम करने से हथेली में सिकुड़न पड़ जाती हो ऐसा कहकर सामुद्रिक विद्या के महत्व को अस्वीकार करने वालों का मत अधिक बुद्धि संगत नहीं जान पड़ता क्योकि यदि ऐसा ही होता तो धनी लोग जो हाथ से कुछ काम नहीं करते उनके हाथ में रेखायें नहीं होती या कम होती। इसके विपरीत किसान और मजूदर जो सदा कठिन परिश्रम में लगे रहते है उनके हाथ में बहुत अधिक रेखायें हुआ करती परन्तु ऐसा देखा नही जाता। परीक्षणों के आधार पर हमे इसी नतीजे पर पहुंचने के लिए विवश होना पड़ता है कि हाथ की रेखायें अपने अंदर कुछ रहस्य छिपायें हुए हो। वह रहस्यहय हैं कि मनुष्य की भीतरी परिस्थितियों की और भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं की हस्तरेखाएं इस प्रकार की सचित्र लिखावट है जिसे पढ़कर अपने बारे में और दूसरों के बारे में बहुत सी अज्ञात बातों को जाना जा सकता है।

सामुद्रिक विद्या का इतिहास बहुत पुराना है। भारत वासी पुरातन काल से इससे लाभ उठातें आ रहे है। यहां से इस विद्या का अन्य देशो में प्रसार हुआ और चीन, तिब्बत, फ्रांस, मिश्र, यूनान आदि देशो में भी यह विद्या फैली। ईसा से तीस हजार वर्ष पहले चीन में हस्त रेखा जानने वालें विद्वान मौजूद थे। ऐसा पता चलता है यूनान देश में पीलीर्मन, अलातूनिया, प्लिनी, हिस, पानस आदि कितने ही विद्वान इस विद्या के धुरंधर ज्ञाता हो चुके है। इतिहास में ऐसा उल्लेख मिलता है कि सम्राट सिंकदर को हिसपानिक नामक विद्वान ने हस्तरेखा संबंधी एक पुस्तक स्वर्णाक्षरों में लिखकर भेंट की थी। जब छापेखानों का अविष्कार हुआ ही था। कि बाइबिल के बाद सामुद्रिक शास्त्र संबंधी एक डिक कुंट सिरोमन नामक पुस्तक जर्मनी देश में सन् 1375 ई. में छपी। इसके बाद वहां सन् 1490 ई में एक दूसरी पुस्तक श्रोमैंटिया अरिस्टाजिस कमफिजुर्टस छपी। ये दोनों पुस्तके आज भी ब्रिटिश म्यूजियम में सुरक्षित है। इंगलैंड में चौथे जार्ज के शासन काल में यह विद्या इतनी अधिक बढ़ी कि धूर्त लोग इसके द्वारा अनुचित लाभ उठाने लगे। ऐसे लोगों के विरूद्ध वहां की पार्लियामेंट ने एक एन्टी पामिस्ट्री बिल पास किया।

शेष पेज 8 से आगे.....

योरोपीय देशों ने हस्त रेखा विद्या के सम्बंध में महत्वपूर्ण खोजें की और विज्ञान द्वारा वह साबित किया कि यह विद्या शरीर विज्ञान और मनोविज्ञान के आधार पर अवलंबित हैं। वैज्ञानिक मेन्सीनर ने अपने परीक्षणों द्वारा यह साबित कर दिखाया कि हाथों में एक विशेष प्रकार के लाल रंग के परमाणु होते है जो रेखाओं के सहारे सहारे बढते और पीछे हटते है। डां. ओसकर ने इस विषय में अच्छे ग्रंथ लिखे है। मि. शेरों की पामिस्ट्री दुनियां भर में ख्याति प्राप्त कर चुकी है।सामुद्रिक विद्या के प्रेमियों को यह बात विशेष रूप से ध्यान रखने की है। कि हाथ की विभिन्न रेखाओं पर तथा हाथ की बनावट पर विस्तृत विचार करने के उपरांत ही किसी निर्णय पर पहुंचना चाहिए। केवल एक रेखा या अमुक चिन्ह को देखकर ही कोई निश्चित सम्मति प्रकट न कर देनी चाहिए चतुर वैद्य कई प्रकार की परीक्षाओं द्वारा रोग की जानकारी प्राप्त करते है। इसी प्रकार विभिन्न पहलुओं पर विचार करके ही हाथ का फल निर्धारित करना चाहिए। ❋❋❋

अमृत वचन

कर्म से स्वभाव बनता है, स्वभाव से ही चरित्र बनता है, चरित्र से भाग्य बनता है जो बदलता नहीं। इसलिए कर्म ही भाग्य का निर्माण करते हैं। कर्म का फल अवश्य भोगना पड़ता है।

मेवाड़ विश्वविद्यालय व **अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ**
के संयुक्त तत्वाधान में
ज्योतिष तंत्र शिक्षा प्रसार समिति, आगरा
के अंतर्गत करें
4 वर्षीय इंटीग्रेटेड पोस्ट ग्रेजुएशन एवं पीएच. डी.
आवश्यक शैक्षणिक योग्यता - स्नातक (ग्रेजुएशन)
अथवा स्नातकोत्तर (पोस्ट ग्रेजुएशन)

देय राशि	₹ 75000/- प्रति वर्ष
विवरण पत्रिका	₹ 500/-
प्रवेश परीक्षा शुल्क	₹ 1000/-

भविष्य दर्शन® ज्योतिष एवं वास्तु शिक्षण संस्थान
भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा। मो. 9557775262, 9719666777

शेष पेज 11 से आगे.....

मुश्किल होता है। हमारी मान्यताएं भी अजीब है। बुजुर्गो का विवाहित बेटी के घर रहना तो दूर की बात है वे उसके यहाँ का पानी पीना भी पाप समझते है। बुजुर्ग अपने बेटे की शिकायत करते रहेंगे, प्रताडित होते रहेंगें परन्तु रहेंगे अपने बेटे के साथ एक ही घर में।एक सच्ची घटना है मेरे परिचित के दो बेटे है। बड़ा बेटा विवाहित है और आगरा में ही सैटिल हैं। माता पिता से अलग रह रहा है। यदाकदा वह अपने माता पिता से मिलने आ जाता है। छोटा बेटा उनके साथ ही है। गत माह छोटे बेटे की शादी हो गई। बहू विदा होकर आती है। लडके की माँ बहू बेटे का स्वागत करती है, आरती करती है, बलैयां लेती है, पाँवडे बिछाकर वह बहू को अन्दर ले आती है। अचानक बेटे की माँ रोने लगती है। हम लोग समझ ही नही पाते है कि वे क्यों रो रही है। रिश्तेदार समझे कि वे शायद भावुक हो गई है। बस वे रोये जा रही थी। नई बहू ने भी गले लगाकर सान्त्वना देने का प्रयास किया। कुछ समय बाद वे रोते रोते बोली कि **आज उनका छोटा बेटा भी पराया हो गया है।** आज उसकी विदाई है इसी लिए वे रो रही है। हमें तो जिन्दगी भर हाड़ ही पेलने पडेगे। यह भी एक बुजुर्ग माँ की दिली छटपटाहट। राजनीति में बुजुर्गो को देश की बागडोर सौपी जा सकती है। मगर घर में बूढे पिता से सलाह लेने की जरूरत तक नहीं समझी जाती है। बुजुर्ग वोट बैंक है। मगर वे हाशिये पर है। उनके कल्याण के लिए देश में ओल्डएज होम बने हुए है। लेकिन उनमें सिर्फ 75000 लोगों के रहने की व्यवस्था है, जब कि बुजुर्गो की संख्या लगभग साढे दस करोड है। ओल्ड ऐज होम मे रहने वाले बुजुर्गो को प्राप्त सरकारी सुविधाएँ नाकाफी है। यहाँ कुछ समाज सेवी संस्थाएँ इन बुजुर्गो की सेवा करने के लिए आगे बढ़कर सरकार को सहयोग दे रही है।इस भागती दुनियां में बुजुर्गो का अकेलापन बढ़ रहा है। वे अवसाद से जूझ रहे हैं। उन्हें अपने बच्चों का साथ चाहिए, परिवार चाहिए, ओल्ड एज होम नहीं। सरकार को वरिष्ठ नागरिको के कल्याण हेतु मंत्रालय गठित कर प्रभावी योजनाएँ बनानी चाहिए। जिस बेटे को उगँली पकड़कर उसे चलना सिखाया, उसी बेटे से बूढे माता पिता आशा लगाते है कि वह वृद्धावस्था में उनका सहारा बने। बुजुर्गो को भी चाहिए कि वे भी बच्चों की जीवन शैली के साथ तालमेल बैठाएँ ,घर के छोटे मोटे कामों में सहयोग करें, व्यर्थ की टोकाटोकी न करें। बच्चों बहुओं के सिर पर प्यार का हाथ रखें। जब वे परेशान हों तो व्यवहारिक समाधान बताएँ। अपना सुझाव उनके ऊपर थोपे नहीं। फिर देखिये उनका अकेलापन चहल पहल में बदल जायेंगा। आखिर बच्चे अपने बुजुर्गो को क्यों अकेला छोड़ देते है, जब कि उनको उन्नति के पथ पर चलते रहने की शक्ति और साहस बुजुर्गो ने ही दिया है। विचार करें। ❋❋❋

घर, फैक्ट्री, दुकान, शोरूम, हॉस्पीटल, कॉलेज, पेट्रोल पम्प, सिनेमाघर, कोल्ड स्टोरज एवं बड़े आद्योगिक प्रतिष्ठान के वास्तुदोषों का बिना तोड़ फोड़ वैज्ञानिक निवारण एवं आंतरिक साज सज्जा

डॉ. महेश पारासर

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562-2856666, 2525262

शेष पेज 9 से आगे .....

एक पीतल अथवा चांदी का कलश गुडी बांध देते है। यह गुडी नववर्ष में प्रकृति के सौन्दर्य तथा स्वागत का प्रतीक मानी जाती है।

उगादी(आंध्र प्रदेश)- चैत्र मास के प्रथम दिन को आंध्र प्रदेश में उगादी के नाम से मनाया जाता है। तेलगु लोगो की मान्यता है कि इसी दिन भगवान ब्रह्मा ने सृष्टि का प्रारंभ किया था और इसी आस्था के कारण इस दिन श्रद्धालु हिन्दू नए कपड़े पहनकर मंदिरों में जाकर पंडितों से वर्षफल सुनते है। उगादी के दिन पूरे आंध्र प्रदेश में घरों को आम की पत्तियों और रंगोली से सजाया जाता है। उत्तर भारत की नवरात्र की भांति ही आंध्र प्रदेश में भी उगादी पर शुभ कार्य प्रारंभ किये जाते है। इस दिन आंध्र प्रदेश में कवि सम्मेलनों के आयोजनों के मिश्रण से तैयार उगादीपच्चाडि व्यंजन के साथ सहभोज भी होता है। इस सहभोज में अमीर गरीब अथवा जाति का कोई भेदभाव नहीं होता।

चेतीचंड (सिंधी)- चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीय को सिंधी लोग सबसे बड़ा त्यौहार चेतीचंड मनाते है जिसका शाब्दिक अर्थ है चैत्र का चन्द्रमा। मान्यता है कि इसी दिन भगवान झूलेलाल जी का अवतार हुआ था। इस दिन अधिकतर सिंधी व्यापारी नववर्ष का आरंभ तथा बही खाते का पूज न करते है। चेतीचंड के दिन वर्ष 1967 में भारत सरकार ने सिंधी भाषा को मान्यता दी थी। इसलिए संविधान में सिंधी भाषा को शामिल किए जाने के कारण यह दिन सिंधियत दिवस के रूप में भी मनाया जाता है।

विशु (केरल)- चैत्र मास के शुल्क पक्ष की प्रथम तिथि को केरल में भी नववर्ष उत्सव मनाया जाता है जिसे मलयालम में विशु के नाम से जाना जाता है। इस दिन प्रातः मलयाली लोग अनाज फलों और रूपयों से भरी थाली को विशु कनी (इस विश्वास)से देखते है कि इससे वर्षभर उनके घर में सुख समृद्धि बनी रहेगी। इस दिन समृद्धि की कामना से बच्चों और रिश्तेदारों को सिक्को की आकृति वाले विशुकायनीटम भी बांटे जाते है। विशु को हम होली और दिवाली का संयुक्त रूप मान सकते है जिसमे दिन में बच्चों और युवाओं की टोली घर घर जाकर नाच गाकर पैसे मांगती है और रात में छूटते है धमाकेदार पटाखें।

रोंगली बिहू (असम)- असम में यह समय है कृषि का उत्सव बिहू मनाने का। बिहू साल में तीन बार मनाया जाता है। चैत्र में मनाने वाले विहू को बोहाग बिहू अथवा रोंगली बिहू भी कहते है। यह कृषि नववर्ष का प्रारंभ हैं जिसके स्वागत में किशोरियाँ खूब सजधज कर नाचती है।

नववर्ष या पोयला बैशाख- हर तरफ त्योहारों का माहौल हो तो उत्सवप्रिय बंगाली भला पीछे कैसे रह सकते है। नववर्ष के स्वागत में बंगाली लोग अपने घरों में रंगोली बनाते है और उसके मध्य में मंगल कलश स्थापित करते है। नववर्ष की सुबह देवी लक्ष्मी की पूजा की जाती है। बंगलादेश मे इस पर्व को पोयला वैशाख के रूप में जाना जाता है और इस दिन राष्ट्रीय अवकाश रहता है। इस प्रकार भारत के अलग अलग प्रांत में अलग अलग तरीके से नवसम्वत मनाया जाता है। आइये स्वागत करते है भारतीय परम्पराओं के साथ शुभ सम्वत् का।

❋❋❋

शेष पेज 10 से आगे .....

सकते है।

वृष लग्न के व्यक्ति हीरा, पन्ना, और नीलम धारण कर सकते है यहाँ नीलम भाग्येश रत्न होने के कारण विशेष योग कारक है।

मिथुन लग्न के व्यक्ति को पन्ना विशेष योगकारक होता है।

कर्क लग्न के व्यक्ति मूंगा, मोती और पुखराज धारण कर सकते है। यहां मूंगा विशेष योगकारक माना गया है।

सिंह लग्न के जातक माणिक, मूंगा धारण कर सकते है। मूंगा भाग्योदय कारक है।

कन्या लग्न के जातक पन्ना और विशेष परिस्थति में नीलम धारण कर सकते है।

तुला लग्न के जातक पन्ना और नीलम धारण कर सकते है।

वृश्चिक लग्न के व्यक्ति मोती और माणिक धारण कर सकते है। विशेष परिस्थति में मूंगा धारण कर सकते है।

धनु लग्न के जातक पुखराज और माणिक धारण कर सकते है।

मकर लग्न के व्यक्ति हीरा और पन्ना धारण कर सकते है।

कुम्भ लग्न के जातक ही रा और नीलम धारण कर सकते है।

मीन लग्न के व्यक्ति के लिए पुखराज और मोती विशेष योगकारक होता है। उक्त बिंदु सूचना मात्र है, किसी योग्य ज्योतिर्विद से अपनी कुंडली का समग्र अध्ययन करवा कर ही रत्नों को धारण करना चाहिए।

❋❋❋

नम्र बनो कठोर नहीं

एक सन्त बहुत बूढे हो गये थे। उन्होने अपने सभी भक्तो और शिष्यों को अपने पास बुलाया और कहा– 'मेरा अन्तिम समय निकट आ गया है तनिक मेरे मुँह के अन्दर तो देखो कि मेरे कितने दांत शेष है?'

प्रत्येक शिष्य ने उनके मुंह के भीतर देखा ओर कहाँ–'दांत तो कई वर्ष पूर्व ही समाप्त हो चुके है महाराज! एक भी दांत नही है।'

संत ने पूछा –'जीभ तो है?'

सब ने उत्तर दिया –'जी हाँ, जीभ है।'

संत बोले–'यह कैसे हुआ? जीभ तो जन्म के समय भी थी। दांत उससे बहुत पीछे आये। पीछे आने वाले को पीछे जाना चाहिए था– परन्तु यह दांत पहले कैसे चले गये?'सभी शिष्य मौन रहकर एक दूसरे की ओर देखने लगे। तब संत ने धीमे स्वर में कहा– 'यही समझाने के लिए मैने तुम सभी को बुलाया है। देखो, यह जीभ इस लिए मौजूद है, क्योकि यह कठोर नही है और ये दांत पीछे आकर इसलिए पहले समाप्त हो गये क्योकि ये बहुत कठोर थे। दांतो को अपनी कठोरता पर अभिमान था। यह कठोरता ही उनकी समाप्ति का कारण बनी। इसलिए यदि आप सभी अधिक समय तक जीना चाहते हो, **तो नम्र बनो– कठोर नहीं!'**

श्री सुरेश अग्रवाल

शेष पेज 12 से आगे.....

फेसबुक और वॉट्सअप के द्वारा करने लगें है। लेकिन बच्चों के बीच नेट एक आदत बन चुका है जिसका नकारात्मक प्रयोग अधिक किया जा रहा है। लेकिन आज की शिक्षा को देखते हुए नेट बच्चो की पढाई का अभिन्न अंग बन गया है। इसलिए माता पिता बच्चों की शिक्षा पर ध्यान दें और बच्चो को नेट का उचित प्रयोग करना सिखायें।

फेसबुक और बॉट्सअप प्रत्येक व्यक्ति की जरूरत बन गया है चाहे फिर यह नकारात्मक प्रयोग के लिए हो या सकारात्मक प्रयोग के लिए हो। फेसबुक और बॉट्सअप के कारण समाज मे न जाने कितने अपराध दिन प्रतिदिन बढते जा रहे है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि अपनी सोच बदलें और अपने आस पास होने वाले गलत कार्यो को रोके क्योकि नकारात्मकता को खत्म करने के लिए अच्छी सोच का होना बहुत जरूरी है तभी हमारा समाज अपराध मुक्त हो सकेगा। ❋❋❋

शेष पेज 11 से आगे.....

However it is considered that if Venus or Mercury is in Kendra from Moon it increases the auspiciousness of yoga. When the yoga created by Mercury, Jupiter or Venus from Moon is included in Gaj Kesari Yoga it is considered auspicious.

Note: It has often seen that this yoga is not created when Venus is in Kendra from Moon. Both the signs of venus make a shadashak yoga that means located in the sixth and eighth house from each other.

In this situation if one sign of Venus is in kendra and the other in a malefic house the Gaj Kesri Yoga may get cancealed and become inauspicious. In Gaj kesari Yoga of Mercury, Moon has its aspect on Jupiter or Mercury. In that situation Moon has to be in the seventh house from both the planets only then Jupiter and Moon will be in Kendra from each other. ❋❋❋

शेष पेज 10 से आगे.....

की छड़ लगी हुई हो तो इसे शुभ माना जाता है और क्रॉसबार लगी हुई हो तो कम मेहनत से अन्य स्रोतों से आय प्राप्त होती है। यदि किसी तरह की पुरानी जाली उपयोग में लाई जाय तो जिंदगी बहुत कठिन होती है। आदमी दाने–दाने का मोहताज होता है या फिर इतना ही कमा पाता है जिससे उसका गुजारा हो सके।

6. यदि खिड़कियां सुबह के समय बंद रखी जाएं या ये खिडकियां बहुत छोटी हों तो परिवार के बेटे बेटियों को गंभीर हादसों का शिकार होना पड़ता है।

7. जिन घरों के मुख्य द्वार के आसपास की खिड़कियां टूटी हुई होती है वहां रहने वालों की आंखों में कष्ट रहने की संभावना बहुत बढ़ जाती है।

शेष पेज 05 से आगे.....

विभिन्न प्रकार की सामग्री से हवन के फल

यथेच्छा धन प्राप्ति हेतु– दूध मिश्रित तिल एंव चावल द्वारा 10 हजार बार हवन करने से धन प्राप्ति होती है।

कारागार से बंदी की मुक्ति– गुग्गुल और तिल द्वारा 10 हजार बार हवन करने से कैदी कारागार से छूट जाता है।

शत्रु पर विजय हेतु– सेमर के फलों के हवन से शत्रु पर विजय प्राप्त होती है।

रोग शान्ति हेतु– 4 अंगुल की रेडी की लकड़ियाँ कुम्हार की चाक की मिटटी तथा शहद, घी, बूरा तथा खील मिलाकर हवन करने से सभी प्रकार के रोगो से मुक्ति मिलती है।

वशीकरण हेतु– पीली सरसों के हवन से वशीकरण होता है। सब वश में हो जाते है।

आकर्षण हेतु– शहद, घी, शक्कर के साथ नमक से हवन करने पर आकर्षण होता है।

कलह– तेल से मिले हुये नीम की पत्ती से होम करने पर आपस में झगड़ा होता है।

शत्रु स्तम्भन– ताड़ पत्र, नमकयुक्त हल्दी की गांठ से हवन करने पर शत्रु स्तम्भित होता है। राई, भैस का घी, गुग्गल का हवन रात्रि में करने से शीघ्र शत्रुओं का नाश होता है।

संतान सुख– मूल मंत्र का 4 लाख जप करके दशांश हवन, अशोक व कनेर के पत्तो द्वारा करने से संतान सुख प्राप्त होता है।

मन्त्र– ऊँ हीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां वाचं मुंख पंद स्तभ्य जिन्हा कीलय बुद्धि विनाशय हीं ऊँ स्वाहा। ❋❋❋

8. भवन बनाते समय पूर्व दिशा की ओर अधिक खिड़कियां बनानी चाहिये ताकि पूर्व की खिड़कियों से प्रातःकालीन सूर्य की जीवनदायी ऊर्जायुक्त किरणें घर के अंदर प्रवेश कर सकें। इन किरणों सें कीटाणुओं का नाश होता है, घर का वातावरण शुद्ध एंव पवित्र होता है और परिवार के सदस्यों का स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

9. जिस घर के मुख्य द्वार के आसपास दोनों और की खिड़कियां सुंदर एंव सजी होती है उस घर में रहने वाले फैशनेबल होते है या ग्लैमर की दुनिया से जुडे रहते है।

10. उत्तर दिशा धन के देवता कुबेर की दिशा हैं। इस दिशा में अधिक खिड़कियां होने से आर्थिक समृद्धि बढ़ती है।

11. पश्चिम व दक्षिण दिशा में क्रास वेंटिलेशन के लिये खिडकियां बनानी चाहिये। पर ध्यान रहे इस दिशा में खिडकियाँ कम बनानी चाहिये ताकि दोपहर बाद की सूर्य से निकलने वाली हानिकारक किरणें घर में प्रवेश न कर सकें।

12. खिडकियां सकारात्मक ऊर्जा के प्रवाह में सहायक होती है, अतः यह पूर्ण रूप से बाहर या अंदर की ओर खुलनी चाहिये। कभी भी स्लाइडिंग विंडो नहीं बनानी चाहियें। उनमें पूर्ण रूप से सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह नहीं हो पाता है। खिड़कियों को हमेशा साफ सुथरी एंव अच्छी हालत में रखना चाहिये। ❋❋❋